



અ  
સ  
ો  
મ  
ક  
ો  
બ  
ા

તંત્રી

ચી મન લાલ ગો કળ દાસ શાહ



### મહુડિમાંથી ભગેલી એક પ્રાચીન લૈન ધાતુ-પ્રતિમા

\*

આ લૈન મૂર્તિ વડોદરા રાજ્યના વિલાપુર તાલુકના મહુડી ગામમાંથી મળી આવેલી છે. આ મૂર્તિ ધાતુની છે. આ મૂર્તિ સાથે બીજુ વણુ મૂર્તિઓ પણ મળી આવી છે. આની વધુ વિગત માટે આ અંકમાં છપાયેલ પૂ. સુ. શ્રી. ન્યાયવિજયજી મહારાજને “મહુડીની લૈન પ્રતિમાઓ” શીર્ષક લેખ જુઓ.

આ મૂર્તિનું આ જ ચિત્ર ‘શ્રી. લૈન સત્ય પ્રકાશ’ના વર્ષ પાંચમાના ૫-૬ સંયુક્ત અંક, કુમાર ૫૫-૫૬માં શ્રી સારાભાઈ નવાનના ‘ગુજરાતની પ્રાચીન લૈન મૂર્તિઓ’ શીર્ષક લેખ સાથે છપાયેલ છે.

[ પદ્ધોક-શ્રી. સારાભાઈ નવાનના સૌન્યન્યથી ]

આ અંકના અનુક્લિક માર્ગ જુઓ. ધારણ પાનું વીજું

॥ वीराय नीत्यं नमः ॥

# श्री ज्ञेनस्त्यपकाशा

[ १५६ ... ... क्रमांक ७१ ... ... अंक ११ ]

महामहेपाठ्याय श्री मेघविजयज्ञ विरचित

## योवीरि जिन स्तवनभाला

संआढ़क तथा संपादक

श्रीयुत साराज्ञाध भण्डुदाल नवाख

### १-ऋषभजिन स्तवन

( लाठिर दे भात भवार-ओ देशी )

श्री जिन जग आधार मद्देवी भात भखार;  
आज हो सांभी रे श्री इष्टल जिनेसर सेवीर्ज ल. (१)

लरे लरे सांभी रे श्री इष्टल जिनेसर सेविं ल.  
सेतुं ज्ञ गिरि सिरछन, नालि नरेसर पुत्र;  
आज हो लुपट रे जगहीस, तेज्जर्ज लाखुने ल. (२)

आयो हुं प्रबु ! पास, सेवक धो साखास;  
आज हो सही रे साहिं विषु, देंजि डेहि दासने ल. (३)

मनमान्ये अरहास, भांने भोटिम जास;  
आज हो तोहे रे मनभोड, नयन पसाउवे ल. (४)  
नाम धरीने नाथ, वये सहुनो हिंदु हाथ;  
आज हो नेही रे थिति अही, भोटा भेघनी ल. (५)

॥ इति श्री उ० श्री मेघविजयगणिकृतचतुर्विंशत्यां ऋषभस्तवः ॥

### २-श्री अजितजिन स्तवन

( धृथ आंगणुडे पिउ रभाओ-ओ देशी )

ज्यकारी अजित जिनेस, भोहन भन भेल प्रहेस;  
पावन करीर्ज परभेसर रे, साहिं ल. (१)

[ ३६२ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष ५ ]

साहित्य छो रे सेक्षणा, तुझ सूखतसुं रति जागी;  
 मुझ एक रसी लय लागी रे, साहित्य० (२)

जिनपति अतिशय धृत्यारै, हैव ! सेवा करै धरभारै;  
 अवसर सीर क्युं न चीतारै रे, साहित्य० (३)

शुश्रवंता गरव न क्षीजै, हितुयासुं छेत धरीजै;  
 चेतावटि परि पातीजै रे, साहित्य० (४)

तुम्हे घेडा कृतारथ छाइ, सेवकनुं काम न कौइ;  
 तो पछु न हुई कुञ्ज कौइ रे, साहित्य० (५)

साहिणने सामें न्यैवै, सेवक जन निज सिर होवै;  
 भेदधनी सरसाइ छाये रे, साहित्य० (६)

## ३-श्री संख्यजिन स्वतन

( निंदली वैरखु हुई रहिं-ए देशी )

खवतारणु संख्य प्रभु, नित नभीई हो नव नव धरि लाव के;  
 नवरस नाटिक नाचीई, वली राचीई हो करी पूजा चाव के.  
 सेनानंदन वंदिं. (१)

हुःअ होहग छूरै करै, उपगारी हो महि महिमावंत के;  
 लगवंत लगतवच्छिल लबो, साँई हीठै हो तनमन विहसांत के. सेनान० (२)

अपराधी तें जाधर्या, हिवहै कहीई हो तेहनी डेही वात के;  
 मुझ वेला आदेश धरै किम, विसभी हो जगपति तुम धात के. सेनान० (३)

जिभा एलग छीजूही, वली लीजे हो नित प्रति तुम्ह नाम के;  
 तो पिण्ठु मुजरो नवि लहुं, डेता हिन हो ईम रै भन हाम के. सेनान० (४)

ईम जाणीनें छीजूही, जग ढाकुर हो चाकर प्रतिपाल के;  
 तु हुःअ तापने टालवा, ज्यवंतो हो ग्रलु भेद विसाल के. सेनान० (५)

## ४-श्री अभिनन्दनजिन स्तवन

( आज सभी अलगेतीयां हो—ए देशी )

अभिनन्दन जिन वंदना ए, कर्त्तीई धरीहै उच्छाह;  
 धरि सवि संपद संपदै ए, वर मंगल विवाह. अ० (१)

આંક ૧૧ ]

## ચોવીશ જિન સ્તવનમાલા

[ ૩૬૩ ]

પુરિસોાત્મ પરેમેસર્દ એ, અકલ સરૂપ અનંત;  
મોહ તિમિર મહ મોડવા હે, ઉદ્યો રવિ ઉલસંત. અ૦ (૨)

સસનેહા સવિ દેવતા એ, તું નિસનેહા રૈ નાહે;  
તો પિણુ સેવકનો કરે હે, દિલ દેહ નિરવાહે. અ૦ (૩)

ગુણવંતા આદર કરે હે, સવિ નિગુણાં પણ સામિ;  
નિગુણાને પણ ગુણ કરે હે, એ જગ પ્રભુ અભિરામિ. અ૦ (૪)

સૂતાં સુપનૈ સાહિયો હે, આવિ અતિશયવંત;  
તો જાણાં જગનો ધણી હે, રાજે મહુર મહુંત. અ૦ (૫)

શ્રી જિનવર પહ પંકને હે, લમર પરે રમે જેહ;  
મેઘ તણી પરિ મહીઅહૈ હે, જગવદુલ હુદ્ધ તેહ. અ૦ (૬)

## ૫-શ્રી સુમતિજિન સ્તવન

( કલાલકૃતો મેરો રાજિન મેહિયો હો લાલ-એ દેશ )

સુમતિ જિનેસર સાહિયો હો લાલ, સમર્દ્દ હું નિસદીસ વિષુંદરાય;  
અક્ષો જિમ રવિ બિંખને હો લાલ, સેવક પ્રભુ બગસીસ. જિ૦ સુ૦ (૧)

તુમ્હ જસ રસ રસીયા જિ કે હો લાલ, તસિયા દરસણુ કાજ; જિ૦  
ઉલસ્યા ગુણ ગીતસું હો લાલ, તે વસિયા શિવરાજ. જિ૦ સુ૦ (૨)

ગયણુંગણુ તારા પરે હો લાલ, તુમ્હ ગુણ ગળુણુ અસંખ; જિ૦  
લોઠલોઠ ન લંઘીએ હો લાલ, લે હુદ્ધ પરિધિલ પંખ. જિ૦ સુ૦ (૩)

તો પિણુ તુમ્હ ગુણ બોલવૈ હો લાલ, પાવન ઝીને જુહુ; જિ૦  
દરસણુ ઝીને દેવનું હો લાલ, ધન ધન તે મુજ દેહ. જિ૦ સુ૦ (૪)

પતિતપાવન તુહિ જ પ્રભુ હો લાલ, મૈં દીહો મહારાજ; જિ૦  
મેઘવિજય જયવંતની હો લાલ, લોક વધાઈ લાજ. જિ૦ સુ૦ (૫)

## ૬-શ્રી પદ્મપ્રભુજિન સ્તવન

( રાગ-મલદાર, ઉદ્યાપુરરી નારી પુંગલરી પહમિની ર-એ દેશ )

પદ્મપ્રભુ ભગવંત મહંત હિર્દી રમ્યો રૈ કે, મહંત૦  
જ્યાનનિદાન આનંદ અમીરસમય જર્મ્યો રૈ કે; અ૦

અવર દેવતા સેવ સભાવ સહી વર્મ્યો રૈ કે, સ૦  
કલિયો અદિયો મોહ મહારિપુ તેં દર્મ્યો રૈ કે. અ૦ (૧)

[ ३६४ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५८ ६ ]

लगतिरागनो। लाग किनेसरसुं करे रे के, कि०  
 ते नर वंचित लोग संज्ञेग लीला वर्षी रे के; सं०  
 महिमाहिक सवि सिद्धि प्रसिद्धि सुविस्तरै रे के, प्र०  
 अपरंपार संसार-महोदधि निस्तरै रे के.      ८० (२)

इठे जिन हीदार उदार दशा जणी रे के, ६०  
 भिदीओ भिनति योग के वीनति सवि लणी रे के; वि०  
 पवित्र कड़ तम ओह सनेहसुं ओलणी रे के, ओ०  
 थाईं स्वामीप्रसादथी सिद्धि-वधू सणी रे के.      सि० (३)

तुअ नामे आराम हुईं मन माहुरे रे, हु०  
 पामुं सुभसंयोग सुष्यो। जस ताहुरे रे के; सु०  
 तुं सुअ ज्वनप्राणु के आणु वहु सही रे के, आ०  
 रहुं सदा लयलीन हज्जूरे गहुगही रे के.      ह० (४)

जास कर्निजे आस के तास ओसाससुं रे के, ता०  
 वाधे रंग तरंग के मन आसाससुं रे के; म०  
 भेद भेदाद्य देण भयूर विदाससुं रे के, वि०  
 ऐसे तिम प्रभु यास के दास उदाससुं रे के.      द० (५)

( चालु )



## श्री कु८पाठ तीर्थ

लेखक:- मुनिराज श्री ज्ञानविजयज्ञ  
 ( गतांकथी चालु )

तीर्थ-आडमण

आपणे उपर नेह गया के कुल्याक्तीर्थ विकृमती छही सदीमां दैयातीमां आव्युं छे  
 अने ते रेवेताथर छैन तीर्थ छे, तेनी ज्ञानविजयज्ञ दिन पर दिन वर्षती जती हती.

आ रिथति लांगो समय न चाली. पहेलपहेलु वि० सं. ६८०मां धर्मदेवायाए  
 आ तीर्थ पर आडमणु कीर्तुं हतुं. ले के आ आडमणु सप्त ल्लो, किन्तु तेमां तीर्थनो  
 विन्देह न थ्येऽ, तेनो प्रभाव ज्वेने तेवो ज अविच्छिन्न चालु रह्लो, अने ये ज रीते  
 लगभग ५०० वर्ष पसार थ्यां.

झरी आ तीर्थ पर विकृमनी तेरभी सदीना प्रारंभमां आइतनुं भेजुं झरी वहयुं.

अंक ११ ]

## श्री कुद्याक तीर्थ

[ ३८५ ]

आ आङ्गणे विज्ञलरायना भरणे पछी वसवे कुरुं हुतः वसवे विज्ञलरायने भारी नैनधर्मने नुक्षान पहोचाइयुं अने कुद्याकतीर्थने विनाश करवा सम्पत हाथे काम लीयुं हुतुं। विज्ञल अने वसव

कुद्याकज्ञना धतिहास साथे आ बन्नेमो गाठ सम्बद्ध छे। प्रसिद्ध ज्येतिष शास्त्री प. वेङ्गेश आपुज्ज डेटडे नयोतिर्णियुतमां भास्कराचार्यांना परिन्ययमां लघे छे डे-संवादि पर्वती हारभागा मुंगुर्ध धक्षाकाना ज्ञन्तेर पासेथी नीड्यां पूर्व तरह जध गेहावरीना दक्षिणे कठे यीडनगर सुधी लाघ छे। आ यीडथी ४० डेखि २२ डक्षाणी नगर छे, जे नैनेतानी राजभागी छे, जेतो राज भिज्ञल नैन होतो। वि. सं. १२०८ (शाके १०७२) त्यारे त्यां सिद्धांतशिरोभिणि अंथ पूरा अग्रेत छे।

गिज्ञपुरुना वि. सं. १२०८ (शाके १०७२)ना शिलालेखमां विज्ञलरायनो कल्युरी-वंशीय परमाहिपुत्र चालुक्यराज प्रतापी भाँडलिक अने सेनेश तरीके उल्लेख छे।

धतिहासकारो ज्ञावे डे कल्युरीवंशाना सेनापति भिज्ञले त्रीज तैल पासेथी चौलुक्यसत्ता छीनवी लीधी हती। ते योते सुस्त नैन होतो तेमज तेनो वंश नैन होतो। तेनो वंश नैनधर्मनी रक्षा अने वृद्धि करी शक्त, परन्तु तेना पाठ्नगरमां ज नैनधर्मविशेषी अणो जमतां गयां। जेथी नैनधर्मने रक्षणु आपी शके येवा ए राजवंशाने नाशुह करवामां आयो। वीरशैव धर्मनी भरती इरी वणी। राज्य दरयारमां प्रपञ्चो वध्या तेतुं परिणाम देवगिरिना याद्व अने दक्षिणाना द्वार समुद्रना होशियालोनो लालभां आयुं।

७. शे. ए. सो. ४, पृष्ठ १६नी पुट्टोटमां नैन उत्तराधिकारीयोना जधानुं वृत्तांत छे डे-भिज्ञल नैनधर्मनो भद्रान् पक्षुडार होतो, छतां तेणु धर्मिक आधातमां लिंगायतो (वीर शैव धर्मायो) पर त्यां सुधी कृपा दर्शावी हती डे लिंगायतो तहन विशेष थध गया अने तेनो अंत आखुवाने झानी शक्या।

इलीट साहेय कठे छे डे- ते समये नैनधर्म प्रज्ञधर्म होतो। असवे १० वर्ष राज्य कुरुं पछी योताना चार पुत्रोने वहेंची आयुं। परन्तु ते पुत्रो थोडा वर्ष सुधी ते राज्य करी शक्या।

डा. कृष्णस्वामी कठे छे डे-दक्षिणामां नैनधर्मने तोडवाने नैनधर्मने अनुसरता “वीरशैव” धर्मनी स्थापना थध हती, तेमां १. रेवन, २. भाइल, ३. एकाराम (एकांतङ रामाय) अने ४. पडित आराध्य ए चार मुख्य पुरुषो थया छे। एकारामे तो आ संप्रदायने अहु ज जेर आयुं हुतुं। त्यार पछी असव अने चन्नायसवे आ संप्रदायने उपदेशने व्यवस्थित रूप आपी आ संप्रदायने पुनर्ज्ञवन आयुं अने तेने “लिंगायत” नामधी जहेव कर्यो। एटले लिंगायत धर्म ए वीर शैव धर्मनो ज “उर्षोऽहार” छे। अने तेने पुनर्ज्ञवन आपनार असव ज छे। आ असवनुं यरित ते ‘असव-पुराण’ लिंगायत धर्मनो मुख्य अंथ भनाय छे। जेमां असवनुं पौराणिक यरित अने भिज्ञलना विनाशनो चितार आवेभित छे।

सारांश ए छे डे-कल्युरीवंशीय नैन सेनापति भिज्ञल योताना स्वामी चौलुक्यपति त्रिज तेलने लोभधी ज्ञाने कल्याणीनो राज अन्यो, इपसुंहरी पद्मावतीने देखी

[ ३६६ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५० ]

भेदांध अनी तेने परण्यो अने तेषुना ज लाई मंत्री वसवना होथे ज भरायो.

विज्ञवनुं पतन लिंगायतना नेता असव अने तेना अनुयायि चन्द्रासव वर्गेरेणे कुर्यां छे.

असवे विज्ञवना पगले याली एक अमलहार तरीके कारकीर्दी शङ्क मरी अने छेवटे पोताना मालिक साथे राजकीय उत्काति करी तेना नाश कर्या. विज्ञवनुं मृत्यु ए लिंगायते भाटे विज्ञयोत्सव होतो. एम पछु कडेवाय छे डे असवे विज्ञवने शोधी राजधानीनी अहार काढी करभीषु राते कुवामां नाभी भारी नाख्यो होतो. \*

परन्तु आम करवाथी लिंगायतोने पछु धारी सदृगता न भली. तेऽयानी आशाओ उपर तुरत तो पाण्यी इरी वल्युं कारण् ? एक तो कट्याणी ए लैनधर्मनो किल्लो होतो. अने भीजुं आ करभीषु कृत्यथी तेऽयो कुलचुरीय राजवंशनी आंणे यडी गया होता; राजवंशनी अवकृपा उत्तरी होती, एट्टो राजवंश न पडेण्यी शङ्क तेवे स्थाने लिंगायतोने पोतानो धर्मप्रचार करबानी इरज आवी पडी होती. वर्षत जतां एट्टुं परिष्युम आव्युं डे विज्ञवना भरण्य पडी कुलचुरी राज्यमांथी लैनधर्म नीकणा गयो. विज्ञवना पुत्र सोमेश्वर पठी दक्षिणा ज लैनधर्मी होयशब्द सरदार वीरभद्रामना होथे कुलचुरि सतानो पछु अत आव्यो. चरित्र प्रभाषे वि. सं. १२१०मां अने शिलालेखी पुरावा प्रभाषे वि. सं. १२४३मां विज्ञवनुं मृत्यु थेवेक छे.

विज्ञव अने वसवनां संपूर्ण चरित्र विज्ञव काव्य अने वसव-पुराणमां आदेखित छे.

## असवपुराणनी वातो

मास्तर शंखु तुकाराम आपेक्षे काटगाव (निजाम-टेट)मां अगस्ति कर्तिक रवामीना प्रैनोत्तर इप भराही “असव-पुराण” अनाव्युं छे. जेभां डेट्लीक घटनाओ नीचे मुज्जप छे:

शंकरनी यासे भांगणी थाठ डे-दक्षिण भरतमां लैन बौद्ध चार्वाक अने सांभ्यो

\* धतिहासना पाने धर्मना नामे आवा अत्याचारो यत्याना अनेक दाखाओ. नोंधाया छे: पुष्पभित्र राज्यमे सेनाभडेवेतुं धनाम आपो जैन साधु तथा बौद्ध साधुओनां भायो कपाव्यां. राज हृष्वर्धने एके हिवसमां आडसो आडसो साधुओना शिरच्छेद कराव्या.

सुन्दर पांडेये (विक्रमी सातभी सहीभां) ८००० निहोप लैनोने झांसीये यदावा, लेनुं चित्र आने पछु अर्काटना त्रिवलुना महिमां मोन्तु हो छ. आ ज रीते कांचीपति रिंडवर्मन वरणकना डैक्टीय गणपति तैलपद्वे गोने लैनसिंह वर्गेण्ये पछु लैनो. पर बुक्तम गुलर्यो छ अने विनावयोनां शिवातयो अनावी हीथां छे. (नुझी रा. शर्मानुं लैनित्रम गोइ साउथ ईन्डिया.)

चौदूक्य अनयपादे पछु परमार्हत महाराज कुमारपालनां जैन भद्रिशोना नाश कराव्यो, जैन आचार्यने भूंलवी नाख्या अने जैन मंत्रीओ पर बुक्तम गुलर्यो छ.

चुस्त रैवधर्मी चौलराज्ये रामानुजचार्यना शिष्य दुर्द्वालवा अने चेरीमानभीनी आंण्या फळावी नाभी. ( श्रीमती कुमारी सुशीला महेता M. A., L. L. B, नो लेख ‘भारतीय विद्या’ प. १ अ. ४ )

आ दैरेक घटनाओ नादीरथाहो के जहांगीरशाहीने पछु शरभावे लेखो छे.

[અંક ૧૧]

## શ્રી કૃદ્યાક તીર્થ

[ ૩૬૭ ]

ખૂબ વધી પડ્યા છે માટે અવતાર લઈ તેનો ઉપાય ફરવો જેઠાંએ. આથી શાંકર નંદીગણને ભૂલોકમાં જન્મ લેવાની આજા આપી (અધ્યાય-૨). નારદ કંપિએ તેને કણૂયિકમાં વિજન-પુર જીવામાં વાગેવાડી પ્રાંતના હિંગલાપુરી ગામમાં માદીરાજની રાણી માદાનાની કૃકિએ જન્મ લેવાની સલાહ આપી (અ. ૩). નંદીશરે ચોગ છોડીને ત્યાં “અસવ”ના નામથી જન્મ લાયો (અ. ૪). વસવે જરોઈ ફહેરી નહીં અને ખીજાએને પણ જરોઈ ફહેરવાની મતાઈ કરી. અને પોતે લંબ કર્યું (અ. ૭-૮). વિજનલાંને મંત્રી બલહેવ મરી ગયો એટલે તેના કહેવાથી તેના લાણેજ વસવને વિજનલે મંત્રી બનાયો, આ સમયે તેના ધર્મગુરુએ વસવને ગુરુમંત્ર આપ્યો કે પ્રાણ આપીને પણ શૈવધર્મને વધારાને (અ. ૯-૧૮). અસવની એન નારાંધારે ચન્દ્રવસવને જન્મ આપ્યો, અસવે તેને વિહેલી તરફ ભહેર કરી સિદ્ધ અનાયો (અ. ૧૧). અસવે એક ચોગને લિક્ષામાં પોતાનો દેહ પણ સમર્પિત કરી દીધો. આથી અલંપ્રભુએ તેને સાક્ષાત દર્શાન આપ્યાં (૧૨). એક ગોવાળની છોડારીએ શાંકર દ્વારાવેલ વસવનું માદાન્યમય વર્ણિયું અને લોડા આર્થાત્યા (૧૪). વસવે રાજભાડારમાંથી હાન આપનું શરીર કર્યું અને ઘણો વશ મેળવ્યો (૧૬). અસવે ચન્દ્રાસવ વગેરેની સામે શિવ સર્વાધી અનેક કથાઓ કહી અને લિંગ માદાન્યમનો પ્રચાર પારંબ્યો (૧૭ થી ૨૧).

જંગમ માચ્યાદેવ વસવના કપડાં વાવા જતો હતો. તેને ડોઢ અડકી ગયો એટલે માચ્યાદેવ તેને મારી નાખ્યો. આથી પ્રજાએ ગોકર કર્યો અને ન્યાય માખ્યો. વિજનલે આ માટે વસવને ટપોડ આપ્યો. પરન્તુ વસવે માચ્યાદેવનો પક્ષ કર્યો અને વિશેષ જણાયું કે-શિવલિંગ મતની એકતા સ્થાપવા માટે સ્વયં શાંકરે અવતાર લીધો છે. પરિણામે વિજનલે માદી માંગી અને વસવે એ માચ્યાદેવને ગુરુપદે સ્થાપ્યો (૨૨-૨૩). કિનનર બલે છોડકા માટે વિઠને માર્ગી આથી વિજનલે વસવને કહ્યું કે-આ શું ? તારા શૈવો આવા કેમ છે ? ધર્મને નામે પુત્ર પિતા કે ખીજને મારવા એ ઉચિત છે ? વસવે ઉત્તર વાળ્યો કે-રાજન ! વિંગલકન એ કંધ કરે તે ઉચિત જ છે. તે પોતાનો માર્ગ છોડણે જ નહીં. કિનર નિર્દેખ છે. સ્વયં શાંકર પણ તેની નિર્દેખતા પુરવાર કરવાને તૈયાર છે. આ સમયે કિનરની વિનિતિ શાંકર મન્દિરના દરવાજા ખોલ્યા એટલે રાજને કિનરની નિર્દેખતાની પ્રતીતિ થઈ (૨૮).

અસવે પોતાના મિત્રો સાથે જઈ રાજભાડારમાં આતર પાડયું. અને શાંકરે આવીને તે રાજભાડારને પૂરો ભરી દીધો (૨૯).

શિવભક્ત એકાંતરમે કરેલ પૂર્વકાલીન નૈનોના સંહારનું વર્ણિન, પહેલા નૈનો કંઈ રીતે થયા હતા તેનું વર્ણિન, પૌદલના ઉપદેશથી સુન્દર પાડયેએ નૈનોના સંહાર કર્યો તેનું વર્ણિન, વીર શૈવ ધર્મની વિશેષતા અને સરસતા, શિવ અભક્તોનો ચભત્કાર (૩૨), ચોકુલ-ચરણા અલારચાને રાણીની પ્રેરણ્યાથી નૈનધર્મ છોડ્યો. તેનું વર્ણિન (૩૩), નાચ્યાદેવ નૈનોના સંહાર કર્યો, હળરો જિન પ્રતિમાએના દુકડા કર્યો, વૈજને નૈનોને તિરસ્કાર્યા, હળરો નૈનોને સંહાર્યા, હળરો જિનાલયો તોડાં, શાંકરની સહાય્યી આ અધું ય કરતું, શિવના ચભત્કારો વગેરેતું વર્ણિન, એકાંતરમે ચભત્કાર અતાંયો હળરો જિનાલયોનો ધ્વંસ, જિનપ્રતિમાએનો નાશ કરાયો. અસવ તેને ઉત્તમ શિવભક્ત માને છે ને પોતાની પાસે રાખે છે (૩૪). સોદુલયાચે શિવાદ્ય અનાયું. તેની ક્રાતિં

[ ३६८ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १४५ ]

तोडवा विज्ञाले एक विषष्णुमन्दिर अधार्यु अने प्रजनने त्यां आववा जण्णायु एटले वसने विशेष कुर्यां के सोडुलभाय आ मन्दिरमां दृश्यनार्थ नहीं आवे, आ माटे तेना पर दृश्य उररेना नहीं, अन्यथा अनर्थ थें. एम कही शिवमाहात्म्य संख्यायु (३५). शंकर विषष्णुनी सरभामणी करी (३६). एक हिस्स आलगेंव्ये विज्ञाल पासे इत्याह करी के वसव शिवनाग नामना चांडालने पोतानी पासे राखी पूजे छे, तेषु कल्याणी अपवित्र करी छे. आथी विज्ञालराये वसव अने शिवनागने सखामां भोलावी वसने हपडा आएयो. एटले वसने कुंचुं के शिवने नहीं माननारा आलणु करतां चांडाल अळ छे (३७). पठी अनेक चांडाल शिवबक्तोनां हपटांत आप्यां अने कुंचुं के शिवनाग तो लोडातर पुरुष छे. तेना शशीरमां लोहिना स्थाने हृष्ट छे. आम कहीने वसने शिवनागना हाथ झाड्या. हाथमांथी हृष्टनी धारा थीटी. आथी लोडा अहु यमतकार पाम्या अने राज्ञ अने भीज आलगेंव्ये जिवनागने नमस्कार कर्या. वसने शिवनागने पोताने त्यां राख्यो (३८). वसने त्यां एकाराम वगेरे सेंडो अडतो रहेता हता. एक हिस्स वसने ते अधाने धरादा पूर्वक विष लेणवेला प्रसाद आयेयो, पण शिवकृपाथी ते अमृतदृप थाठ गेयो. आ प्रसंगथी नागरिकोने लिंग उपर श्रद्धा प्रकटी (३९). वसनी लक्तमंडणी मात्र लिंगधारीनु ज लोजन देती. आ माटे अनेक उपकथाये। प्रथमित करवामां आवी हती. जगहेव भंतीये आ नियममां भूल करेली तेना प्रायश्चित्तिपे जगहेवने अक्तोना कहेवा मुज्ज्य वर्तन करवानी शरत स्तीकारी पडी अने अक्तोने जमाऊवा पडया (४०).

एक वार विज्ञालराये प्रजनना पोकारथी शिवबक्त मधुप अने आलमनी अंगो उठावी लीधी. आनी अपर लक्तमंडणीने पडी एटले वसने जगहेवने कुंचुं: “ हे जगहेव, तें कुखुल करेल शरत पाणवानो वभत आनी पहेंच्यो छे. ने तुं अनुं पालन नहीं करे तो तारे नरकावास सेववो पडशे. तारे शिवदोहि विज्ञालरायने भारी नाभवानो छे. आम करवाथी तारा पूर्व पापनु प्रायश्चित थाठ जशे. वणी विज्ञालना गया पठी कल्याणी रहेवानी नयी.” जगहेव ए कार्य पोताना भाषे लीधुं एटले लक्तमंडणी कल्याणी छोडीने स्वस्वस्थाने प्रयाणु करी गैद. वसव पण संगमेश्वरना दृश्यनना अहाने त्यांसी सहकुदूंभ प्रयाणु करी गेयो. आ तरह भाताये जगहेवने कुंचुं: “ लाई, तुं राज्ञने भारतो नयी अने ज्ञवतो रहे छे ए श्रुतिभार्गथी विरुद्ध छे. अक्तोये आ महान कार्य तने सोंप्यु छे. वणी वसव जे अधानो सहायक छे ते पण क्यां जतो रह्यो ते समझ शकातु नयी. पण तारे तो ताढुं वयन पाणावु नेच्यि गो.” आथी जगहेवे रात्रे पोताना भित्रो साथे राज्महेलमां ज्ञ “ शिव निंदक्ने आ ज दं होय ”, एम कही सूतेल विज्ञालने भारी नाख्यो. पठी पोतानी भानी पासे आवी प्रतिज्ञा पूर्णु कर्यानी वात कही संख्यावी. पठी परराष्ट्रे ए राज्य पोताने हाथ कुर्यु अने विज्ञालनो वंश नाम-शेष थाठ गेयो. जगहेव ते ज रीते शिवनिंदक्ने भारवामां थयेल दीलना प्रायश्चित्तिपे पोतानु भायुं कापवा तैयार थेयो. एटले शंकरे तेने विमानमां लाई लीधी. वसने पण शंकरे पोतानी साथे लीधी. एटले नंदीकथानो वसवावतार पूर्णु थेयो (४१). वसवतुं लविष्य अने अंथनी पूर्णाङ्गुष्ठि शंक १८३६ विज्यादाशभी शुरुवार (४२-४३). (चालु)

# निरूपवाद

लेखकः— मुनिराज श्री हुराधरविजयज्य

( क्रमांक ६८-६९ थी वालु )

भीज निरूप तिष्यगुप्ताचार्य; आत्मानुं दूंक स्वदृप;  
अंत्यप्रदेशात्मवाद, अने सर्वप्रदेशात्मवाद.

आत्मानुं स्वदृप छ ए दर्शनोनी भान्यता साथे समजत्या पछी स्थादाही आत्माना सम्बन्धमां गोतानुं दूंक मन्तव्य रङ्गु करे छे ने पछीथी आत्माना सम्बन्धमांथी उइ-लवेक भीज निरूप तिष्यगुप्ताचार्यो वाद वाले छे.

स्थादाही-जगतमां आत्मा नाभनो एक पदार्थ छे ते तभो सर्वे सारी रीते समजत्या छो. हे ते आत्मा छोनो छे ते सम्बन्धमां समजुओ.

१. आत्मा नथी नानो तेभ नथी भेटो. परंतु आत्मा जेटला प्रभाणुनु शरीर अहंक रङ्गे छे तेटला प्रभाणुवागो होय छे. जेम दीप उपर जेट्हु आच्छादन (दांडण) भूक्तवामां आवे तेटला विस्तारमां तेनी प्रभा होय छे तेभज आत्मा पण शरीर प्रभाणु ज होय छे.

२. आत्मा एक नथी पण अनेक छे; अनेक तो शु पण जेनी गणनी न थाई शक्क, जेनो पार न पाभी शक्य तेटला अनंतानांत छे. जे तेटला भान्यतामां न आवे तो डाइ समय आवो आवे के संसारमांथी गुवा सुक्त थतां थतां संसारमांथी आत्म-द्रव्य ज खूटी नय. गणनीवाणा पदार्थनो नाश अनिवार्य होय छे.

३. आत्मा ज्यांसुधी संसारमां छे त्यांसुधी ते कर्मथी आवृत छे. ते कर्मने लक्ष्य तेनी ज्ञानशक्ति, दर्शनशक्ति, चारित्रशक्ति ने वीर्यशक्ति वजेरे हायेक छे. डाइ पूछे के आ आत्माने कर्मनो सम्बन्ध अनाहि छे, कुहरती छे-नैसर्जिक छे. जेम पृथ्वीमांथी सुर्वाणु नीड्हे छे त्यारे तेनी साथे भाटी वणगेक होय छे. अहीं डाइ पूछे के सोनाने भाटी क्यारे वणगी? तेना उत्तरमां जेम ज कुहेवाय छे के ज्यारथी सोनुं छे त्यारथी तेनी साथे भाटी वणगेली ज छे. तेम ज्यारथी आत्मा छे त्यारथी ते कर्म संयुक्ता ज छे.

४. आत्माने संसारमां रहेवानां स्थगो सुख-दुःखमय नीचे प्रभाणु छे:

सुक्षम निगोह अने आहर निगोह (साधारणु वनस्पति), ए स्थगो आत्मा अत्यन्त दुःखी छे. एक साथे एक ज शरीरमां अनंत गुवा साथे रहेवुं पडे छे, पछी सुक्षम ने आहर पृथ्वी, जल, तेज ने वायुमां एक साथे असंभ्यात गुवा साथे रहेवुं पडे छे. त्यारथाह गुवने रहेवाने क्रमाः शरीरनो विकास ग्राम थाय छे. प्रयेक वनस्पतिमां एक शरीरमां एक ज जुव रहे छे. पछी अनुक्तमे द्वि-धन्दिय, त्रि-धन्दिय, चतुर्दिय, नारङ्ग, तिर्यंच, पचेन्द्रिय भनुष्य अने देव. तेमां तिर्यंच सुधी आत्माने धर्टुं पण विशेष दुःख होय छे.

[ ४०० ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५६ ६

मनुष्यमां प्रायः सुषुप्तुः ख समान होय छे. ज्यारे हेमामां विशेष सुख ने अल्प दुःख होय छे. परंतु ते सर्वमां शाश्वत सुख भेणवानो अधिकार मनुष्यने ज छे.

५. आत्मानो संक्षेप विकास स्वयं नथी थतो पण कर्मना योगे थाय छे एट्ले आत्मा ज्यारे मुक्त थाय छे ने शरीरनो सदाने भाटे त्याग करे छे त्यारे ते जे शरीरमां होय छे तेमांथी तु लाग कम थधने हु लाग प्रभाष रहे छे. तु लाग कम थवामां कारण ते ज छे के शरीरमां तु लाग पोकाणुवाणा लागमां आत्मप्रदेशा रहेता नथी. ज्यारे आत्मा कर्म विमुक्ता थाय छे त्यारे ते पोकाणु पुराई नय छे अने धनइपे आत्मा हु लागनो रहे छे.

६. आत्माना विभाग करवामां आवे अर्थात् आत्मामांथी नानामां नाना आल्यें जेट्ला शूटा पडे तेट्ला शूटा पाडवामां आवे तो तेवा आल्यें असंभ्याता नीक्को. जे के ते अल्यें शूटा पडी शकता नथी. ते देक अल्युने प्रदेश<sup>१</sup> कहे छे ने तेथी आत्मा असंभ्यात प्रदेशवाणो कहेवाय छे, ते सर्व प्रदेशाथी सपूर्ण आत्मा ए ज आत्मा छे. पण आत्मानो एक प्रदेश के एक प्रदेशाथी न्यून सर्व प्रदेशा आत्मा एवा व्यवहारने पामता नथी.

७. आत्मा एक परिणामी द्रव्य छे. तेथी काई वर्षत सुखी तो काई वर्षत दुःखी, काई समय तानी तो काई समय अतानी, काई समय पुरुष तो काई समय स्त्री, ने काई समय नपुंसक, ए प्रभाषे अनेकविध परिणामने पामे छे. आथी काई एम भानहु ढाय के एक वर्षतनो भूर्भु ते भूर्भु ज, दुःखी ते दुःखी ज, पुरुष ते पुरुष ज ने स्त्री ते स्त्री ज हमेशने भाटे रहे छे ने तेमां इरक्कार थतो नथी तो ते असत्य छे-गिध्या छे.

८. जगत्मां रहेक आत्माओमां केट्लाएक आत्माओ. अत्य रव्वावना छे. केट्लाएक आत्माओ असत्य रव्वावना छे ने केट्लाएक आत्माओ दुर्लभ्य रव्वावना छे. अत्य एट्ले मुक्तिभेणवानी योग्यता धरवानार, असत्य एट्ले मुक्तिने भाटे अयोग्य ने दुर्लभ्य एट्ले काई पण समय नेते धर्म सामग्री ज मणवानी नथी तेवा ज्ञ.

आ सर्व आत्माओनुं सामान्य लक्षण आ छे:

यः कर्ता कर्मभेदानां, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥

संसर्ता परिनिर्वाता, स द्वात्मा नात्यलक्षणः ॥

जे कर्मभेदाने करे छे, कर्मना इतने भोगने छे, संसारमां लाभे छे ने शान्त करे छे ते ज आत्मा छे. अन्य काई रनृपनाणो नथी.

**तिष्ठुसनी भूंअथषु अने निष्ठुर्य**

भगवान भद्रावीर स्नामीने डेवलज्ञान प्राप्त थया पहिं १३ वर्ष भाहनो आ प्रसंग छे: राजगृह नगरमां गुणशैव नामना यैत्यमां अनेक मुनियेथी परिवरेला वसु नामना आचार्य भद्राराज विशेषता हता. तेमने चौंद पूर्वतुं तान हतुं, तेग्गो शुतकेवणा तरीके विष्यात हता. तेग्गो शिष्येने सारी रीते लक्षावता हता. तेमना भजनार सर्व शिष्येमां

१ पदार्थमांथी शूटा न पडी राके तेवा नानामां नाना भागने प्रदेश कहे छे, अने शूटा पडी राके तेवा नानामां नाना भागने भरमाणु कहे छे.

अंक ११]

## निष्ठनवनवाह

[ ४०१ ]

तिष्यगुम नामना पण्य एक शिष्य होता. ते सभये तिष्यगुमने चौह पूर्वमाना दक्षमां 'आत्मप्रवाह' पूर्वनु अध्ययन चालतुं हुं. पाठ लेता एक समय नीचोनो पाठ आव्यो—

"एगे भंते। जीवपपसे जीवेति वत्तव्वं सिया? णो इणमटे समटे पवं दो जीवपपसा तिणि संखेज्ञा असंखेज्ञा वा जाव पगपपस्त्रो वि यं जीवे णो जीवेति वत्तव्वं सिया जम्हा कसिणे पडिष्पुण्णलोगागासपपस-समतुल्लापपसे जीवेति वत्तव्वं" इत्यादि

"बागवन! ज्ञवनो एक प्रदेश ज्ञव कही शकाय? आ विचार सत्य नथी. ए प्रमाणे ज्ञवना ए प्रदेशो, नयु प्रदेशो, संभ्याता प्रदेशो, असंभ्याता प्रदेशो ने छेवटे एक प्रदेशन्यून सर्वप्रदेशो पण्य ज्ञव ए प्रमाणे कही शकाय नहि. जे भाटे संपूर्ण सर्व दोकाकाशना प्रदेश जेट्ला प्रदेशवालो ज्ञव ए ज ज्ञव कही शकाय छे." वर्गेरे.

आ पाठ लघुतां लघुतां तिष्यगुम मृंजया अने उपरनो विचार अज्ञायर यथार्थ रीते समझु शकाय नहि. आ पाठना अर्थथी तेमणे एक नयो विचार पोताना भनथी कही काहो डे—जे ज्ञवनो. एक प्रदेश ज्ञव नथी, ए नथी, नयु नथी, हजार नथी, लाख नथी, संभ्याता, असंभ्याता ने छेवट एकप्रदेशन्यून सर्व प्रदेशो व्यारे ज्ञव नथी अने छेवटनो. एक प्रदेश मले त्यारे ज ज्ञव थाय छे. भाटे जे ते छेल्दो प्रदेश मले छे ते ज ज्ञव छे, तेमां ज आत्मत्व रहेक छे, भाटे अनितम प्रदेशने ज ज्ञव मानवो नेघशे. आ विचार एटेलेथी ज न अट्टोये परंतु आ एक उदाहरण परथी तेओ. सर्व द्रव्यने आ ज दृष्टिथी नेवा लाग्या अने नक्की करी लीधुं डे दैक द्रव्यमां तेनो छेल्दो अवश्य ज द्रव्य छे, अने द्रव्यत्व दैक द्रव्यना अनितम अवश्यवमां ज रहे छे. ए प्रमाणे ते 'अन्त्य-प्रदेशवाह' तरीपे ग्रसिद्ध थया.

## स्थविरे साथे चर्चा

तिष्यगुप्ते पोताना विचारे स्थविर मुनिओ पासे रजु कर्या त्यारे स्थविर मुनिओ तेने समजनवा लाग्या—

**स्थविरे—**लह! तमारा कहेवानो सारांश ए छे डे-ज्ञेम-आकार रहेता छतां ज धट थाय छे भाटे धट गो आकार स्वरूप छे, पण्य आकारथी डोळ जूही वस्तु नथी. ए प्रमाणे अंत्यप्रदेश रहेता छतां ज आत्मा छे भाटे आत्मा पण्य अंत्यप्रदेश स्वरूप छे, पण्य तेथी डोळ जूही वस्तु नथी. तेनी व्याप्ति तमे आ प्रमाणे कहो छो डे जे रहेता छतां जे थाय ते ते स्वरूप छे ज्ञेम आकार रहेता छतां थतो धट आकरूप छे तेम अंत्य प्रदेश रहेता छतां थतो आत्मा अंत्य प्रदेश इप छे.

**तिष्यगुम—**हा! मारुं कहेतु ए ज छे डे अनितम प्रदेश रहेता छतां ज आत्मा थाय छे भाटे आत्मा अनितम प्रदेश स्वरूप छे. हु तेनी सिद्ध भाटे ग्रेयोग आ प्रमाणे कुं धुः : आत्मा अन्त्यप्रदेशरूपः, सत्यन्त्यप्रदेश एवात्मसत्त्वम्, विरहे विरहः। आत्मा अंत्य प्रदेश इप छे. अंत्य प्रदेश रहेता छतां ज आत्मानी सत्ता होवाथी. अने अंत्य प्रदेशना अलाववमां आत्मा न रहेता होवाथी. भाटे आत्मा अंत्य प्रदेश इप छे.

**स्थ० मंहानुबाव!** तमे आ व्याप्ति ग्रेयोग करा छो ते डीक छे, परंतु तेमां जे हेतु भूडा छो ते डीक नथी. कारण डे ते हेतु असिद्ध छे. अंत्य प्रदेश रहेता छतां ज आत्मा

[ ४०२ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष ६ ]

रहे छे ते डेवी रीते ? शेष प्रदेश रहेता छतां पशु छेल्दो प्रदेश नथी रहेतो त्यारे आत्मा नथी रहेतो अटले शुं ते छेल्दो प्रदेशमां शेष प्रदेश करतां कंध विशेष छे ? ने विशेष नथी तो शा भाटे शेष सर्व प्रदेशो रहेता छतां पशु ते अनितम प्रदेश नथी रहेतो अने ते आवेदी ज आत्मा एवो व्यवहार थाय छे. अने ने विशेष छे तो ते विशेष शुं ?

तिं० ते छेल्दो प्रदेशमां विशेष नथी एम नथी, पशु विशेष छे.. ते आ प्रभाषे-सर्व प्रदेशो रहेता छतां पशु ज्ञां सुधी छेल्दो प्रदेश नथी होतो त्यां सुधी वस्तु अपूर्णु छे ने छेल्दो प्रदेश आवे छते वस्तु पूर्णु थाय छे भाटे ते छेल्दो प्रदेशमां 'पूरवापशु' छे. आ 'पूरवापशु' सर्व प्रदेशो करतां अनितम प्रदेशमां विशेष छे. वणा भीजुं ते अनितम प्रदेश भीज प्रदेशो ने पशु विशेषित करे छे भाटे तेमां उपकारित्व नामनो पशु भीजे विशेष छे. ने त्रीजुं ते आगमभां विशेषे शेष प्रदेशोयी जुहो-पृथक् अतावायो छे भाटे आगम प्रतिपादित्व इप त्रीजे विशेष छे.

स्थाँ० तमे ग्रथम ने पूरवापशु विशेष अतावायो तेमां ऐ ग्रथ उपस्थित थाय छे: आ पूरवापशु छेक्षा प्रदेशमां क्लेवाय छे ते तेमां ज छे के भीज प्रदेशमां पशु छे ? ने भीज प्रदेशो छे एम क्लेशो तो तेमां कंध विशेषता न रही. अने तेमां ज छे तो ते वास्तविकपशु छे के अपेक्षा-कृपनाथी छे ?

तिं० पूरवापशु अनितम प्रदेशमां ज छे ने आकामां नथी, कारणु के आ अनितम क्लेवाय छे ने आकाना प्रदेशो अनितम क्लेवाता नथी. ने अनितम होय तेमां ज पूरवापशु रहे छे. भाटे पूरवापशुपशु विशेष पशु छेक्षा प्रदेशमां वास्तविकपशु रहे छे.

स्थाँ० आ प्रदेश छेक्षो होवायी तेमां पूरवापशुपशु विशेष वास्तविकपशु रहे छे, एम तमे ने कहे छो ते त्यारे ज स्थिर थाय के ज्ञारे आ प्रदेशमां छेक्षापशु नकी थाय. आ ज अनितम छे एवो निश्चय थाय त्यारे तो ते छेक्षापशु आ प्रदेशमां डेवी रीते छे ? आत्मप्रदेशनी अपेक्षाये के आत्माये रेडेला आकाशप्रदेशनी अपेक्षाये ?

तिं० ते छेक्षापशु आ प्रदेशमां आत्मप्रदेशनी अपेक्षाये छे. कारणु के एक ऐ नशु एम करतां आ ने छेक्षो आवे छे ते आत्मप्रदेशनी ज गणुनीये आवे छे.

स्थ० इङ्क छे. एक ऐ नशु एम गणुतां लले एक वस्त आ प्रदेश छेल्दो आवे पशु हमेश भाटे ते छेल्दो क्ली शक्षाशे नहि, कारणु के आत्मप्रदेशो ते क्लाध वस्तु नथी के तेने रहेवाने अमुक स्थण मुकरर कर्या होय. ते तो पाणीनी पेठे यणविचण थया करे छे. हाल ने ग्रथम होय ते क्षण घणी अनितम थध ज्ञय ने अनितम होय ते भध थध ज्ञय, भाटे आत्मप्रदेशनी गणुनीये अमुकमां ज छेल्दोपशु रही शक्षो नहि.

तिं० आत्मप्रदेशो यणविचण थया करे छे ते अरोअर छे, पशु आत्मामां आठ प्रदेशो एवो छे के तेने कही पशु पोताना स्थणेथी झेक्कार थतो नथी; तेवो तो ज्ञां होय त्यां ज रहे छे. भाटे तेमानो ने आठमो ने सर्व प्रदेशनी अपेक्षाये छेल्दो छे, तेमां छेक्षा-पशुं भानीशुं भाटे उपरोक्त दृष्टय नहि आवे.

स्थ० आयुभन ! तेमानु आ कथन सर्वथा ज्ञानभरेलु छे, कारणु के तमे ने आठ प्रदेशो स्थिर रहे छे तेम क्लिं पशु ते आठ प्रदेशो के नेने इयक प्रदेश क्लेवामां आवे छे ते आठ प्रदेशो कंध आत्माना क्लाध अन्त भागमां रहेता नथी के ज्ञामाथी क्लाधमां छेक्षा-

આ'ક ૧૧ ]

## નિહુનવાહ

[ ૪૦૩ ]

પણ રાખી શકાય છે. આડ પ્રદેશો હંમેશ ભધભાં એટલે આત્માની વચ્ચમાં જ રહે છે, તેની ચારે બાજુ અસંખ્યાત આત્મપ્રદેશો ફરી વળેલા હોય છે માટે તે આડમાંથી તો કોઈ છેલ્દો માની શકાય જ નહીં.

તિઠ અચ્છુ, અમે આત્મપ્રદેશની અપેક્ષાએ નહીં પણ આત્માએ રોકેલ આકાશ પ્રદેશની અપેક્ષાએ કોઈ પણ એક પ્રદેશમાં છેલ્દાપણું રાખીએ છીએ, કારણું કે જે આકાશ પ્રદેશ નંધી હોય છે તે સર્વદા ત્યાં જ રહે છે.

સ્થ્ય૦ આકાશપ્રદેશો સ્થિર છે તે સાચું છે, પણ તે તો આત્માની ચારે તરફ દ્વીપિદ્ધાભાં રહેલા છે માટે કઈ દ્વિપિદ્ધાભાં ક્યા આકાશપ્રદેશમાં રહેલા આત્મપ્રદેશને છેલ્દો માનવો ?

તિઠ નીચેની દિશાથી શરૂ કરી બાર્થ્ય દિશાના ભધ્ય ભાગમાં કે આકાશપ્રદેશ હોય ત્યાં રહેલ આત્મપ્રદેશને અન્ત્ય માનવો હીક છે. ને તેમાં કોઈ દૂષપણ પણ નથી.

સ્થ્ય૦ હીક. આ કલ્પના પણ ત્યારે જ થઈ શકે કે ને અમુક આકાશપ્રદેશમાં આત્મા કાયમી રહેતો હોય, પણ તેમ નથી. આત્મા તો આજ આ આકાશપ્રદેશમાં તો કાલ બીજી આકાશપ્રદેશમાં એમ ફેરફર કર્યો કરે છે. માટે અમુક આકાશપ્રદેશ પણ નક્કી કરી શકાય નહીં. એ રીતે અમુક આત્મપ્રદેશમાં જ છેલ્દાપણું છે તે સ્થિર થતું નથી. ને વળી પૂરવાપણું પણ છેલ્દાભાં જ છે તેવું કંઈ નથી, કારણું કે તેમ હોય તો આ પહેલો, આ બીજો, આ દાઢોમો, સોમો, હળવરમો વગેરે વ્યવહાર ન થઈ શકે. માટે દરેક આત્મપ્રદેશમાં અમુક અમુક સંખ્યાનું પૂરવાપણું તો છે જ. માટે પૂરવાપણાંપ વિશેષ ડેવળ છેલ્દાભાં જ નથી રહેતો એટલે તે વિશેષ પણ થઈ શકો નથી.

તિઠ સર્વ આત્મપ્રદેશમાં અંશે અંશે પૂરવાપણું છે તે મને માન્ય છે. પરંતુ અસંખ્યાતમો એવો જે છેલ્દો વ્યવહાર થાય છે તે પૂરવાપણું તો તે છેલ્દા આત્મપ્રદેશમાં છ ને તે છેલ્દાપણું અપેક્ષાથી લેવામાં આવે છે માટે અમુક એક આત્મપ્રદેશ બીજી સર્વ આત્મપ્રદેશ કરતાં વિશેષ થઈ શકે છે.

સ્થ્ય૦ અપેક્ષાથી તમે અમુક આત્મપ્રદેશને છેલ્દો દરાયો, હવે તે અપેક્ષા તમારી પોતાની છે કે સર્વ મનુષ્યોની છે ? સર્વ જનની કહેતા હો તો તે અસંભવિત છે, કારણું કે સર્વજન સમૃત એક વિવિધ કોઈ થઈ શકતી નથી નેમકે એમ જ તેની વિવિધાભાં સમૃત થતા નથી. ને ને તે અપેક્ષા તમારી પોતાની છે તો તે સર્વમાન્ય થઈ શકે નહીં.

તિઠ બલે બ્રહ્મ જગત મારી માન્યતાને માન્ય ન કરે પણ તેથી તે મિથ્યા છે એમ કલી શકાય નહીં. કારણું કે તે વિચાર યુક્તિસંગત છે, એક એ ત્રણું એમ ગણુની કરતાં અમુક અમુક આત્મપ્રદેશ છેલ્દો આવે તે નિશ્ચિત છે. ને આત્મપ્રદેશ છેલ્દો આવે તેમાં શેષ પ્રહેદ કરતાં છેલ્દો હોવાથી અનિતમ પૂરવાપણું વિશેષ છે. કોઈ મુશ્કે કે એક એ ત્રણું એવી ગણુની પણ કંઈ નિયત ન થઈ શકે. તો તે માટે હું કંઈ આ મારી ગણુની છે તે માટે માતો જ એમ હું કંઈ કાઢને તે પરાણે માનવા આગહ કરતો નથી, પણ ને ગણુની. આગમમાં જ કરેલી છે તે જ નિયત રાખું છું, તે આ પ્રમાણે. ‘પરે ભન્ને ! જીવન્યપસે જીવત્તિ વસ્ત્વચ્ચ સિયા !’ એ નિરૂપથ્યામાં જે છેલ્દો બતાવેલ છે તેમાં જ છેલ્દાપણું નિયત છે ને તેને જ હું કાયમી રાખું છું.

[ ४०४ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष ६ ]

स्थ० देवानुप्रिय ! आगममां भतावेल निःपण्यथो तमे अमुक एक आत्मप्रदेशने छेद्यो मानो तमे कायमी करो छो ते उचित नथी, कारणु के आगमनु आ निःपण्य ते कंध शास्त्रत के सहा भाटेनु नियत नथी पण् अमुक विषयने समजववा भाटे विक्षा करीने भतावेल छे. भाटे ए रीते छेद्यापण्यानो निश्चय करतां चक्रकी नामनो दोष आवे छे. ते आ चक्र दोषनी साथे ज आत्माश्रय अने अ-गोन्याश्रय दोषो तो आवे ज छे. भाटे कार्ध एक प्रदेश छेद्यो मानवो ने तेमां पूरवापण्याइप विशेष छे एम भानवु ए झार्ध पण्य रीतिए घटतु नथी. वणी उपकार करे छे तो शुभीज प्रदेशो आत्माना नथी तमे आत्माना करे छे ? नाना छे ते भोया करे छे ? अल्पशक्तिवाणा छे ते शक्तिने वधारे छे ? शुभ उपकार करे छे ? जेवो ते विवक्षित छेद्यो प्रदेश छे तेवा ज सर्व प्रदेशो छे. यत्किंचित् पण्य तद्वापत नथी तो उपकार शुभ करे ? भाटे उपकार करवा इप विशेष पण्य अवश्यर नथी. अने त्रीजुं आगममां वे एक जुहो करीने भतावेल छे ते तो एक कल्पना छे. ते जे आगमने ज पूर्ण विचारो तो आगण एंज आगममां कहेल छे के 'कसिणे पडिपुण्णे लोगागासपपसतुल्लपपसे जीवति वत्तव्यं सिया.' सर्व पूर्ण्येकाकाशना प्रदेश जेट्या प्रदेशवाणो जुव एंज जुव एम कही शक्य भाटे जेम हार तंतुवाणो पट हार तंतु भगे छते ज पट एवा व्यवहारने पामे एम आत्मा पण्य तेना सर्व प्रदेशो भगे छते ज आत्मा कहेवाय भाटे एक प्रदेश न्यून सर्व प्रदेशो के छेद्यो एक प्रदेश ए काहु आत्मा कहेवाय नहि.

आ प्रभाषे धण्डा समय सुधी स्थविरो साथे तिष्यगुप्तने चर्चा चाली पण्य तिष्यगुप्त साची वर्तु समजन्या पण्य नहि अने स्थविरो जितर पण्य आपी शक्या नहि.

## आचार्य भद्राराजश्रीनुं समजववुं

न्यारे स्थविरोथी तिष्यगुप्त न मान्या त्यारे आचार्यं भद्राराज श्री वसुसूरिजु भद्राराज तमने समजववा लाभ्या. चिरङ्गुव ! तु अन्त्य प्रदेशने ज जुव कहे छे ते शाथी ? शुभीज प्रदेशो ते छेक्षा प्रदेशो नथी. खधा प्रदेशो एक सरभा स्वसाववाणा अने एक सरभा प्रभाषुवाणा छे. जेम तु छेक्षा प्रदेशने ज आत्मा कहे छे तेम पहेला प्रदेशने इम नथी कहेतो ? वणी आत्माना पहेला भीज वोरे प्रदेशमां वे जुवत्व न रहेतु छेय तो ते छेक्षा प्रदेशमां पण्य न रहे. रेतिना एक कछुयामांथी तेव नथी नीकणतु तो धण्डा.

१ चक्रकुं स्व३५ आ छ : 'स्वावबोधसापेक्षावबोधसापेक्षावबोधसापेक्षावबोध-विवर्यत्वेन समिन्तत्वज्ञापनम् चक्रकः ॥ एक ज्ञानतुं सापेक्ष जीन्तुं ज्ञान, तेनुं सापेक्ष नीजु ने तेनी अपेक्षा राखतुं बायुं ज्ञान; तेने विषय करीने प्रथम ज्ञानने जुहु भतावतु ते चक्र कहेवाय छ. लेवी रीते विक्षा ज्ञानने सापेक्ष आगम छ, तेने सापेक्ष निःपण्य छ, तेने सापेक्ष आ अन्तिम छ ते छ, ने तेने सापेक्ष तमारी विक्षा छे भाटे तमे जे तेने पृथक् जण्डावें छा ते चक्र होप दूषित छ. चक्रनी घेठे पुनः पुनः दर्ढा करे ते चक्र कहेवाय. जे भाटे उनरान्यायन युहद् वृत्तिमां धृतु छे के पर्वं सति चक्रकाळ्यो द्वोषः, तथाहि विवक्षानैयत्यमन्त्यत्वात्, तन्नैयत्यं च निरूपणायां पर्यन्तभवनात् तन्नियमोऽपि' विवक्षानियमादिति । एम बतां चक्र नामनो होप आवे छे. ते आ प्रभाषे-विवक्षानो निश्चय छेद्यापण्याथी छे, तेने निष्कृय निःपण्यामां पर्यवसित थाय छे, ते नियम पण्य विवक्षानियमथी छे,

અંક ૧૧]

## નિહુનવાહ

[૪૦૫]

કણુ બેગા થયા છતાં પણ તેમાંથી તેલ નીકળતું નથી તેથી એવો નિયમ થાય છે કે અવયવના એક એક અવયવમાં જે ન હોય તે અવયવના સમૃદ્ધાયમાં પણ ન હોય. તો પછી છેલ્લા એક અવયવમાં તો ક્યાંથી જ હોય? કદાચ તું એમ માનતો હો કે, ગ્રથમ વગેરે પ્રહેશમાં દેશથી જીવત્વ રહે છે ને છેલ્લા મહેશમાં સંપૂર્ણપણે રહે છે તો તે પણ યથાર્થ નથી, કારણ કે ગ્રથમ વગેરે પ્રહેશો છેલ્લા પ્રહેશ કરતાં કંઈ જુદી જાતિના નથી; બધા પ્રહેશો એક સરળા જ છે. તેથી એકમાં દેશથી ને એકમાં સર્વથી એમ કહી શકાય નહિ. વળી આગમમાં ગ્રથમ વગેરે પ્રહેશમાં આત્મત્વનો નિપેધ કર્યો છે ને છેલ્લા પ્રહેશમાં નિપેધ નથી કર્યો મારે છેલ્લા પ્રહેશમાં જ આત્મત્વ રહે છે એમ કહેતું યુક્તા નથી. આગમમાં તો એક વગેરે સંખ્યાથી આત્મત્વનો નિપેધ છે તેથી આગમની રીતિએ તો છેલ્લો [પ્રહેશ પણ એક હોવાથી તેમાં પણ આત્મત્વ ન જ રહે ને આગમમાં સાથે જ કહ્યું છે કે સંપૂર્ણ પ્રહેશવાળો આત્મા જ આત્મા કહેવાય.

એવંભૂત નયને આશ્રયને જો કહેતો હો કે દેશ પ્રહેશથી વરસુ લિન નથી માટે અન્ય પ્રહેશને આત્મા કહી શકાય તો વિચાર કે એવંભૂત નયના મતમાં તો દેશ પ્રહેશ એવી ડોઈ કદ્દળા જ નથી, તે તો સંપૂર્ણ વરસુને જ વરસુ માને ને તેથી પણ સંપૂર્ણ પ્રહેશયુક્ત જીવને જ જીવ માનવો જોઈએ.

જે ઉપચારથી છેલ્લા પ્રહેશને જીવ માનતો હો તો તે ઉપચાર પણ કંઈક ન્યૂન પ્રદાર્થમાં સંપૂર્ણ પ્રદાર્થને ઉપચાર થાય છે. જેમ ગામ અખ્યું, વસ્ત્ર અજ્ઞું, તેમાં ગામનો કે વસ્ત્રનો ધર્મો ખરો લાગ અખ્યો હોય ત્યારે કહેવાય છે. પણ ગામનું એક નાનું ઝૂંપું અખ્યું હોય તો ગામ અજ્ઞું એમ કહેવાતું નથી. વળી પટનો એક તાતણો પડ્યો હોય તો તેમાં પટનો ઉપચાર થતો નથી પરંતુ પટના અમુક તંતુઓ સંભીલિત થયા હોય તો જ તેમાં પટનો ઉપચાર થઈ શકે છે. તેમ આત્માના એક પ્રહેશમાં આત્માનો ઉપચાર ન થાય પણ ઉપચાર કરવો હોય તો તે પણ અમુક પ્રહેશોમાં જ થાય માટે તારું એક છેલ્લો પ્રહેશ જ આત્મા છે અને બીજા પ્રહેશા આત્મા નથી એવું કથન ડોઈ પણ રીતિએ સંગત થતું નથી. માટે આયુભનું! મિથ્યા આયદ છોડીને પ્રભુ શ્રીમહાનીર ભગવાનના નિકાલાઅધિત વચ્ચોમાં શ્રદ્ધા રાખ.

**તિષ્યગુપ્ત ગચ્છ બહાર થયા**

પૂજય ગુરુમહારાજશ્રીએ પણ ધર્મી ધર્મી યુક્તિઓથી મિષ્ટ વચ્ચોથી તિષ્યગુપ્તને સમજાયા છતાં પણ જયારે તિષ્યગુપ્ત ન જ સમજાય ત્યારે ગુરુ મહારાજે વિચાર્યું કે આ જીવને હાલ ડોઈ દુષ્કર્મનો ગાઠ ઉદ્ઘાટન થયો છે. તેથી હાલ આ સમજુ છુકે તેમ જથ્થાતું નથી. માટે તેને વિશેષ સમજન્યો એ ઉચિત નથી. અને તેની સાથે સમન્ય રાખવો તે પણ ઉચિત નથી. એમ વિચારી તેઓશ્રીએ તિષ્યગુપ્તને ગચ્છ બહાર કર્યા. શક્તિ સમ્પદ તિષ્યગુપ્તે પણ ગચ્છથી જુહા પડી પોતાનો સ્વતંત્ર સમૃદ્ધાય જમાયો ને પોતાના વિચારને ફેલાવવા આમાતુગામ વિચારવા લાગ્યા.

**મિત્રશ્રી શાવકથી પ્રતિષ્ઠોધ અને આદોચના**

આમલકદ્યા નામની એક નગરી છે ત્યાં મિત્રશ્રી નામે એક શાવક રહે છે. તેના હાડોહાડમાં અરિંહત ધર્મનો રંગ લર્યો છે. તે મહાનીર પ્રભુનો સાચો ઉપાસક છે. તેનું સમ્યક્તવ નિશ્ચય છે. તે આમલકદ્યા નગરીમાં એક સમય તિષ્યગુપ્તા-

[ ४०६ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५५८ ]

यार्थ विचरता विचरता आव्या अने उपदेशथी अनेक अव्यात्माओंनां चित्तने आवर्जित करवा लाग्या.

आवड भिन्नथी पण व्याख्यान अवणु भाटे तेमनी पासे जतो होतो. तेमनी विपरीत प्रझपण्याथी आ आवडने हृष्यमां दुःख थतु हुतु. तेमने सत्य मार्ग लाववानी तीव्र नभाना तेना मनमां नगी हती. परतु शास्त्रार्थ करीने हराववानी शक्ति ते धरावतो न होतो, तेथी ते आवा शक्तिसम्पन्न आचार्यने ठेणु लाववा अनेक युक्ति प्रयुक्तिओ विचारी रहो होतो. एकदा तेने एक युक्ति सुकृती आवी.

प्रथम तो ते आ आचार्यनो अंगत अक्षत अन्यो. सेवा सुश्रूषामां लाग लेवा लाग्यो ने एक द्विस प्रसंग पाभी सर्व साधुओ संहित आ आचार्यथीने निमंत्रणु करी घोताने घेर लाल लेवा भाटे ऐलावी गेयो. तेनी पूर्ण अक्षित लेइ आचार्यथी अक्षल साधुओ साथे तेने घेरे पधार्या. आनेड पर आचार्यथी आहिने ऐसारी युंहली काढी. वास्त्रेप प्रमुखथी तेमनी पूजन करी वंहन करी ते पछी तेमने वहेराववा भाटे आहार पाणी वस्त्र पात्र वगेरे लाव्यो. महाराजे वहेरावा भाटे पात्र तैयार कर्युं एट्ले आवड आहारमांयो-हरेक भिष्णुन वगेरेसांथी छेल्ले एक एक कणु लक्ष वहेराव्यो, पाणीनुं एक अंदू वहेराव्यु ने वस्त्रमांथी पण एक तांतण्या ज वहेराव्यो.

अक्षत आवडना आवा विचित्र वर्तनी तिष्ठगुप्ताचार्य आश्र्य पाभता तेने कहेवा लाग्या के आवड ! शु आवा आउंयर पूर्वक अमने अहीं आमंनी अमारी मस्करी करे छे.

प्रसंग पाभी भिन्नथीये कहुं के—

युरु महाराज ! पदार्थ भात्रो अनितम अवयव ए ज अवयवी छे ए आपशीनो सिद्धान्त छे. जे ते सिद्धान्त यथार्थ होय तो मे आपी मस्करी शी करी ? ने जे अम न होय तो कहो के आ सिद्धान्त असत्य छे. अनितम अवयव आभा अवयवीनुं काय ने न करतो होय ने तेथी तेमने आ अन्न-पान-वस्त्रपात्र वगेरेना छेल्ला अवयवो संतोष न पभाइता होय तो तेवा अवयवहाइ (छेल्ला अवयवमां अवयवी भानवा ३५) विचारमां तेमने भिथ्या आग्रह शाथी थेयो ? घट पट्टुं काय करतो नयो. तेम पट्टो एक तंतु पणु हाँडीथी, लज्जनीयी रक्षणु करवा वगेरे कार्यने करतो नयो. वणी एक अवयवमां पूर्ण अवयवी भानवा भाटे नयो कोई उदाहरणु के नयो कोई प्रभाणु; नयो आपत वयन के नयो कोई युक्ति. भाटे आप आवा भिथ्या विचारने तिळांजली आयो ने प्रक्षु श्रीमहावीर-स्वामीनुं शासन पाभी तेमां स्थिर थायो !

दुःकर्म अलास थवाथी; लहान्नां उद्य जगवानो होवाथी आवड भिन्नथीना आ वयनोनी तिष्ठगुप्ताचार्यने सवणी असर थध, तेमने सत्य समजनयुं ने आवडने तेमने अमाव्यो. घोताना जूळ विचारने दूर करी सर्व समक्ष सत्य मार्गना पुनः अनुयायी थया. पछी आवड विधिपूर्वक अन्न वस्त्र पात्र वगेरे वहेराव्या.

पछी तिष्ठगुप्ताचार्य शियो साथे युरु महाराज पासे आव्या ने घोताना पापतु पायश्चित कर्युं, सन्मार्गांभा स्थिर थया अने अनेक शुवोने प्रतिशोध करी अनितम आराधना करी अनितम अवस्थामां आत्माने सुधारी सद्गतिना लाज्जन थया.

इति निहूनवबादे द्वितीयो निहूनवः समाप्तः (थालु)

# મહુડીની જૈન પ્રતિમાઓ

દેંદુ મુનિરાજ શ્રી ન્યાયવિજયલુ

આજે આખા ગુજરાતના લૈનોમાં મહુડી એક પ્રસિદ્ધ ચમત્કારી તીર્થધામ તરીકે મશ્વર છે. મહુડીને આદર્શ પ્રસિદ્ધ બાપ્યાનું માન સર્વસ્થ યોગનિષ્ઠ શાસ્ત્રવિશારદ નૈનાચાર્ય શ્રીમહ ભુદ્ધિસાગરસર્વિશ્વરળુને ધટે છે. તેમણે ગુરુઆમનાયથી પ્રાપ્ત શ્રીવંટા-કર્ણ મહાવારની મૂર્તિ સ્થાપી કરેના ચમત્કારના લીધે ગુજરાતના લૈનોમાં મહુડી પ્રસિદ્ધ પામી ગયું.

મહુડી એક પ્રાચીન શહેર હતું. અત્યારે એની મહત્ત્વ અને ગૌરવ દેખાડતાં ડેટલાંથે અંગ્રેજો, એંધા(વાંધા)ની વચ્ચે દેખાતા મકાનોના પાયા અને હેડ જાંચાણુમાં પણ દેખાતી કિલ્સે બંદી મહુડીની પ્રાચીનતા સિદ્ધ કરી રહેલે છે. આ પ્રાચીન મહુડી તો નિર્ણ નારીની જેમ તેના ભયંકર એંધા (વાંધા)માં નષ્ટ ભષ્ટ થઈ પડેલી છે. નંતું મહુડી તો એક નાનકડા ગામડાઝે છે. ગામની પણ્ણિમ લાગોળે એક સુન્હર જિનાદ્વારા, પાસે જ શ્રીમહ ભુદ્ધિસાગરસર્વિશ્વરળુસ્થાપિત વંટાકર્ણ મહાવારનું ચમત્કારી મંહિર છે અને પાસે જ શ્રીભુદ્ધિસાગરસર્વિશ્વરળુસ્થાપિત ભયંકર સ્મારક-સમાધિમંહિર છે. વચ્ચે અગીયા છે, સામે ઉપાદ્રાય છે.

વર્તમાન મહુડીથી પૂર્વ દિશામાં લગભગ એક માઈલ દૂર એક ડેટચાર્કટું વિશ્વાલ મંહિર છે. એક જાંચા ટેકરા ઉપર આ મંહિર આવેલું હોવાથી દૂર દૂરથી દેખાય છે. નીચે સાખરમતી નહીં પોતાનો વિશ્વાલ દેખ-પટ-પાથરીને આગોટી રહી છે. આ નહીંમાં ન્યારે પાણીના પૂર આવે છે ત્યારે જાણે છુવતો જગતો પ્રલયકાળ આની રહ્યો હોય તેમ લાગે છે; એ પ્રવાહ સામે શહેરા કે ગામડાં, પર્વતો કે ઝડો હતાં નહોતાં થઈ નથી છે. એ નહીંએ ડેટલાંથે ગામો અને શહેરોને પોતાના ઉદ્દરમાં સમાધિ લેવરાની છે; અને એના લીધે જ આ પ્રાચીન મહુડી ગામ પણ નષ્ટ-ભષ્ટ થયું છે અને જે ગીંઘા ઉપર મહુડી હતું તાં મોટા મોટા, ખાડા પાડી દીધા છે. યદ્વારા છેલ્દાં થોડાં વર્ષોથી સાખરમતીએ પોતાનું હેણું બદલ્યું છે, એટલે ગામવાળાઓને શાન્તિ છે, છતાં નિસ્નગા (નહીં)નો વિશ્વાસ ડેટલે રખાય ?

આ ડેટચાર્ક મંહિરથી થોડે દૂર મંહિરના નિમિત્તે જોદ્કામ કરતાં પ્રાચીન સ્થાપયો સાથે પ્રાચીનતમ ચાર નૈન મૂર્તિઓ નીકળી હતી. તેમાંથી જે સૌથી મોટી ભય અને મનોહર મૂર્તિ છે તે તો ડેટચાર્કના મહંતળું પોતાના મંહિરના અહારના ભાગના એક ઓરડામાં એક વેહા પર સ્થાપિત કરી સીમેન્ટથી સ્થિર કરી દીધા છે. અમે ન્યારે મહુડી ગયા ત્યારે ત્યાંના શાવડાઓ નૈનમૂર્તિ નીકળ્યાનું જણાયું. અમારી વિસુરી એ મૂર્તિ-એનાં દર્શાન માટે નીકળી વૈશાળની ગરમી; સામે જ સવિતા નારાયણ પોતાના પ્રખર પ્રતાપે તપતા આગળ વધી રહ્યા હતા. અમે નાના મોટા ખાડા ટેકરા વટાની સુડી પડેલી નહીના નહાના વહેળાને વટાની મોટા ટેકરા ઉપર ચટચા. ગરમી કહે માંનું કામ ! અમે ત્યાં ગયા એટલે તરત જ એ મહંતળના લાઈ ત્યાં આવ્યા અને અમને જિનમૂર્તિવાળો એરડો અતાયો. મૂર્તિ ધાતુની, ભય અને પ્રાચીન છે. મહન્તે પૂછ્યું: આ ડાની મૂર્તિ છે ?

[ ४०८ ]

## શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

[ પથ્ય ૬ ]

અમે કહ્યું: નૈન મૂર્તિ છે. તેમણે કહ્યું: આ બૌદ્ધ મૂર્તિ છે એમ કહેવાય છે. અમે બરાબર બારીકીથી નિરીક્ષણ કર્યું. અમે પૂર્વ દેશના વિહાર દરમ્યાન રાજગૃહી, પટણા, અનારસ, ક્ષત્રીયકુંડ આદિ સ્થાનોમાં તથા ભયુરાના કંકાલીલામાંથી નીકળેલી અને લખનૌ મ્યુઝીયમાં રહેલી, તેમજ સેટનહેઠ કોલખામાંથી ઉપલબ્ધ થયેલી નૈનમૂર્તિઓનાં દર્શન કર્યાં હતાં, એટલે આ મૂર્તિ જોતાજ બૌદ્ધ અને નૈન મૂર્તિનો બેદ જોઈ લાયો; અમે એમ બરાબર લાગ્યું કે આ નૈન મૂર્તિ જ છે. આવી નૈન મૂર્તિઓ પણ અમે ઉપર્યુક્ત સ્થાનોમાં જોઈ છે. એટલે આ ડાટચાર્કમાં નીકળેલી અને ત્યાં રહેલી મૂર્તિ નૈન મૂર્તિ જ છે એમાં અમને લગારે સંદેહ ન લાગ્યો.

અલારત, જિનમૂર્તિ ઉપર રહેલી શિખાનો - વાગના ગુંચાનો-ભાગ તથા શરીર ઉપરનો ભાગ, તથા વ્યાધાસનાદિ જોઈકાદ અગ્નાયા ભાઈ અને બૌદ્ધ મૂર્તિ કહેવા લલચાય એ સંકુલિત છે, પરંતુ નૈન મૂર્તિઓની રચના, તેનું શિદ્ય અને કથાના અભ્યાસી તથા પ્રાચીન નૈન મૂર્તિનો અભ્યાસી ડાર્ઢ પણ મહાતુભાવ આ મૂર્તિને જરૂર નૈન મૂર્તિ કહેશે એમાં અમને લગારે સં દેહ નથી. હવે આપણે આ મૂર્તિનું સૂક્ષ્મ નિરીક્ષણ કરી લઈએ.

એક સરસ વ્યાધાસન ઘનેલું છે, અને છેડામાં વાદની સુંદર આકૃતિ આપેલી છે. વચ્ચમાં ધર્મચક અને તેની પાસે અન્ને બાળુ એ હરણુ આપેલાં છે. આ મૂર્તિ ધર્ણી પ્રાચીન હોવા હતાં યે મૂર્તિમાં રેખાંકન બહુ જ રૂપાંત અને સાદે છે. આકૃતિ સુંદર જોકેલી છે, વ્યાધાસનના ઉપરના ભાગમાં વચ્ચની રચના છે.<sup>૧</sup> અરધો ભાગ ઉપર અને શેડા નીચે લટકતો હેખાડેલો છે પરંતુ એવી સૂક્ષ્મ કોરણી આપી છે કે ત્યાં બરાબર ધ્યાન ન આપીએ તો આ વસ્તુ સમજાય તેવી નથી. છેડે વચ્ચની ડાર જણાય છે. ઉપર કમલાસન છે. સુંદર કમલની કોરણી હેખાય છે, આ કમલાસન ઉપર પગાસનરથ શ્રીવિતરાગહેવની મૂર્તિ છે. છાતીમાં મધ્ય ભાગે બારીક શ્રીવત્સતું ચિહ્ન હેખાય છે, સહેજ જીચાણમાં છાતીનો ભાગ ઉપસેલો અને ડીંડી સાદે હેખાય છે. ગળામાં સુંદર ત્રિવલી હેખાય છે, છાતીનો ભાગ પહોળો અને ડોક સરસ ભાંચી છે.

શુદ્ધ મૂર્તિના શરીરમાં જન્મારે વચ્ચ, વચ્ચની રેખાઓ સાદે હેખાય છે જન્મારે અહીં શરીર ઉપર કયાંચે વચ્ચ હેખાતું નથી. દૂરથી જોનારતે લસે એક ક્ષણું ભ્રમણા થાય, પરંતુ વાસ્તવિક રીતે વચ્ચતું નામ નિશાન પણ નથી, છાતીનો ભાગ સાદે હેખાય છે.

પ્રતિમાની મુખાકૃતિ લભ્ય અને મનોધર છે. પ્રાચીન સમયમાં નૈન મૂર્તિઓ કેવી લભ્ય અને કલામય અનતી તે આને બરાબર ધ્યાનમાં રાખવા યોગ્ય છે. મુખમાં જે આપોનો ભાગ છે તે પણ બહુ જ દર્શનીય છે. અર્ધ સુકુલિત આંખમાં અદૂર ચાંદીની સફેદાઈ છે અને વચ્ચમાં ક્રાકીનો આકાર છે, જે આ મૂર્તિએ શ્વેતાંધરીય છે તે સાદે સાદે ભતાવી આપે છે. બૌદ્ધ મૂર્તિ આવી નથી હોતી.

વિશાલ અને જોંચું લલાટ છે. માથા ઉપર ડેશોતું અનાવેલું જોંચું શિખામંડલ છે. પાણના ભાગમાં મનોધર ભાગંડલ છે. એક લાંબી પાટ જેવું અનાવી એ ભાગ તેમાં જોડી

૧. આવી વચ્ચની વેડવાળા આસન ઉપર જિરાજમાન કરેલી મૂર્તિએ મધુરાના કંકાલીલામાંથી નીકળેલી લખનૌના મ્યુઝીયમાં છે.

અંક ૧૧ ]

## મહુરીની જૈન પ્રતિમાઓ

[ ૪૦૬ ]

ભામંડલ અનાચું છે. એ ભાગના સીધા પટામાં પણ સુંદર વેલખુંથી અનાવેલી છે. પાઠની અને બાળમાં ફૂલ ચોકડી, ગજમુખ, વ્યાઘ્રમુખ આહિ આલેખેલ છે.

ખલા પાછળ એક ફૂલપટી છે કે ભામંડલને પડકી રાખે છે. અને તેના ફરતી એક મોટી ગોળ ફુમાન છે. અમે આ ભામંડલ અહાર કટાવીને જેથું વચમાં કરેલું આરીક ડાતરકામ બહુ જ સુંદર છે. મૂર્તિના સામેના ભાગમાં લેખ છે કે હેડ પાછળ ચોતરક ફરતો છે. મૂર્તિ સીમેન્ટથી સ્થિર કરી હોવેલી હોવાથી લેખનો પાછળનો ભાગ તો અમારાથી વંચાય તેમ ન હતો. સામેના ભાગ કે હેખાયો તેની ડાપી ઉતારી લીધી. અમે એ ડાપી ઉતારી હતી તેમાં એકમાં તો આછા પાતળા અક્ષરો ભાડ્યા છે. આ લીપીના અભ્યાસીઓ તેનો બરાબર ઉફ્લ કરી શકે તેમ છે.

આ લેખની ડાપી વડોદરા રાજ્યના પુરાતત્વ સંશોધન ભાતાના અહેવાલમાં ડાટ્યા-ક્રીની મૂર્તિઓનો પરિચય ચિત્ર પ્લેટ નં. ૪ અ, ૫ અ, ૫ બ, અને ૬ અમાં આપવામાં આવેલ છે. અને પુરાતત્વ વિભાગના ઉપરી શ્રીયુત હીરાનંદ શાસ્ત્રીજીએ આ મૂર્તિઓ માટે ચર્ચા કરી છે. જેનો સાર હું આગળ આપીશ. એ અહેવાલમાં એ. એસ. ગડેજે આ મૂર્તિનો લેખ આ પ્રમાણે આપ્યો છે.

**“નમ [:] સિદ્ધ [નમ] વૈરિગણસ્ત...ઉપ [રિ] કા-આર્ય-સંધ-શ્રાવક”**

આ લેખનો ભાવાર્થ જેતાં નમસ્કાર ભંતના ભીજા પદ્ધને-સિદ્ધને નમસ્કાર કરેલા છે. ‘વૈરિગણુ’નો ઉલ્લેખ છે તે પણ કદ્વસુત્રમાં આવતી સ્થવિરાવલીમાં કે વૈરીશાખાનો ઉલ્લેખ છે, તે સમૃદ્ધાયના આચારોં આ મૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા કરેલી હોવાથી ‘વૈરિગણુ’નો ઉલ્લેખ છે. સંધ અને શ્રાવક શબ્દ આજે પણ શ્વેતાંબર નૈન સંધના દરેક અનુયાયીને શ્રાવક કહેવાય છે તેને અંગે પ્રસિદ્ધ જ છે.

આ લેખ એમ બરાબર સિદ્ધ કરે છે કે આ મૂર્તિ શ્વેતાંબર નૈન સંધે અનાવેલી અને શ્વેતાંબર નૈનાચારોં પ્રતિષ્ઠા કરેલી જિનમૂર્તિ છે. આને સાઝ શિલાલેખ હોવા છતાં તેને બૌદ્ધ મૂર્તિ કહેલી એ તો અન્યાયની પરાક્રાણ જ કહેવાય.

વડોદરાના પુરાતત્વ વિભાગના અધ્યક્ષ શ્રીયુત હીરાનંદ શાસ્ત્રી આ મૂર્તિને નૈન મૂર્તિ નહિ કિન્તુ બૌદ્ધ મૂર્તિ હોવાનું જણાવે છે. પરંતુ તેમની આ માન્યતાનું સુંદર; અને સચોટ રીતે શ્રીયુત સારાભાઈ નવાજે નિરસન કર્યું છે. એ સંખ્યાનો તેમનો આણો લેખ મુખ્યથી પ્રગટ થતા “ભાગીય વિદ્યા” નામના નિમાસિકના પ્રથમ વર્ષના ભીજા અંકમાં પ્રગટ થયેલો છે તે જિજ્ઞાસુગો વાંચી હો. હું એ લેખનું અહીં પુનરાવર્તન કરવા નથી માગતો. શાસ્ત્રીજી, મૂર્તિ ઉપર આવો સાઝ લેખ હોવા છતાં, શા માટે અને બૌદ્ધ મૂર્તિ માને છે તે વિચારણીય છે.

એવું કેટલોયે વાર અન્યું છે કે નૈન મૂર્તિઓને બૌદ્ધ મૂર્તિઓને તરીક એળાખવામાં આવી હોય. આવી ભૂલો અંગે વિદ્યાનોના હાથે થતી હતી અને તેમનાં પગલે પગલે ચાલવામાં આપણું હિન્દી વિદ્યાનો પણ નૈન મૂર્તિઓને બૌદ્ધ મૂર્તિઓ તરફ સંખોધવાનું સાહસ કરતા હતા. પરંતુ આજે એ યુગ ચાલ્યો ગયો છે. જ્યાં યુક્તિ, શુદ્ધિ અને તર્કની પ્રતિષ્ઠા છે ત્યાં ‘હું કહું એ જ સાચું’ તે ન જ ચાલે. શ્રીયુત શાસ્ત્રીજી કાઢ પણ બૌદ્ધ મૂર્તિમાથી સિદ્ધાને નમસ્કાર, વૈરિગણુ, શ્રાવક આહિ શબ્દહોવાળા શિલાલેખો બતાવશે ખરા?

[ ४१० ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ ७५६ ६

भीजुं औङ् मूर्तिने वस्त्र-उत्तरीय वस्त्र, उपवीत आहि चिह्नो हेखाय छे तेमानुं एक पण् चिह्न आ मूर्तिमां अतावरो घरा ? श्रीयुत शास्त्रीजु मूर्तिमां एक द्वेषीमां भीजु द्वेषी राषेली होवाथी औङ् मूर्तिनी कळपना करे छे. परंतु तेमनी आ मान्यता भूल-झरेली छे. औङ् मूर्तिओ. जुही जुही मुद्राओशी अंकित होय छे, तेनी धर्षी मुद्राओमानी एवी शेक मुद्रा होय छे के द्वेषी पर द्वेषी होय, परंतु नैन मूर्तिओमां तो, भीजु काढ मुद्रा छे ज नहि; ऐसी-पचासनसंख किन मूर्ति, पछी ते प्राचीन हो के अर्वाचीन हो, दैरेकमां द्वेषी उपर द्वेषी होय ज छे शेटले आ दलील तो औङ् करतां नैन मूर्तिनी तरडेखुमां वधु जय छे. आ पछी शास्त्रीजु भीजु ए कारणा आपी आ मूर्तिने औङ् मूर्ति होवानुं जखावे छे परंतु ते कारणा पण् सभा नथी :

(१) मूर्तिना मध्य लागमां धर्मचक छे. (२) मूर्तिनी आगेचा यक्यकित छे.

हे पहेलुं कारणु लेईचे—

प्राचीन सभयनी नैन मूर्तिओमां धर्मचक ज३२ भगे छे. जेमड मथुराना कंकाली-टीलामांथी नीकणेली अने लघोनाना म्युशीयममां रहेली धर्षीभरी नैन मूर्तिओमां धर्मचक विद्यमान छे. हुं आ संघर्षी झाला मथुराना म्युशीयमनी नैन॑ मूर्तिओमाना परियमां विगतवार लघी गयो छुं; तेमज पटना, राजगृही अने क्षत्रीयकुंडना नैन मांहिरोमां पण् आवी मूर्तिओ-धर्मचक वाणी मूर्तिओ-छे. भारवाडनी पंचतीर्थीना सुप्रसिद्ध ज्ञवितस्थाभी-श्रीमहावीर प्रलुनी मूर्ति, नादीयमां छे त्यां पण् धर्मचक छे अने अभद्रावादानां भद्रिश के जेमा परिकर छे तेमानी केटलीकेएक मूर्तिओमां धर्मचक अत्यारे विद्यमान छे. श्रीमान् शास्त्रीजु आ धर्मचको वरावर निहाणी पोतानी ए भूल सुधारे के धर्मचक केवळ औङ् मूर्तिओने ज होय छे अेवुं नथी पण् नैन मूर्तिओने पण् धर्मचक होय छे. तेमज अपराजित वर्गेरे शिल्पग्रंथेमां पण् उत्तेज मले छे के नैन मूर्तिओमां धर्मचकनी रचना कराय छे.

हे भीजुं कारणु लेईचे. अडीनी नैन मूर्तिने यक्यकित नेवा छे आ लेई शास्त्रीजु लप्ते छे—“अथो उलुं यक्यकित यक्षुओ औष्ठोओ जैनो पासेथी अपनावेली होय एम लागे छे, कारणु के औङ् मूर्तिओ के चिनेमां ते प्रचलित नथी. जे के तेमां पण् कवचित् भणी आवे छे भरी. आवी मूर्तिना उदाहरणु भाटे (चित्र लेट ७ वाणी) तारंगानी टेकी उपरनी औङ् मूर्ति (तारादेवी)नो हुं उल्लेख करुं छुं.”

शास्त्रीजु आ मूर्तिमानी यक्यकित यक्षु लेवा छता-एक स४४ पुरावे लेवा छता, एम लघी भनमनावे छे के नैनो पासेथी आ कणा अपनावेली छे; खरी रीते काढ पण् औङ् मूर्तिमां आवी यक्यकित यक्षुओ होती ज नथी. जे तारादेवीनु दृष्टांत तेच्चो आपे छे त्यां पण् तेच्चो भूद्या छे. तारादेवी ए भुद्देवीनी मूर्ति नथी; एमनी मान्यतानुसार एक सामान्य देवीनी मूर्ति छे. खरी रीते आ मूर्ति पण् औङ् मान्यतानुसारिणी नथी परंतु एक नैनशासनाधिकायिनी देवीनी मूर्ति छे. परंतु हुं ए चर्चा अत्यारे नहि करुं. श्रीयुत शास्त्रीजुने भारुं सादर निमंनंशु छे के काढ पण् औङ् मूर्ति आवी यक्यकित

‘जैनज्ञेयाति’ मासिक तथा आ जैन सत्य प्रकाशना अडीमां मे आ संघर्षी क्षम्युं छे.

અંક ૧૧]

## મહુરીની નૈત્ર પ્રતિમાઓ

[ ૪૧૧ ]

ચક્ષુઓ વાળી અતાવો. બૌદ્ધમાં ચક્યકિત ચક્ષુઓવાળા મૂર્તિઓ અનતી જ નથી. આવી મૂર્તિઓ શ્વેતાંશુર નૈત્ર સંઘના અતુયાખીઓ જ અનાવે છે. એટલે આ ચક્યકિત ચક્ષુ વાળી દ્વાલ પણ નૈત્ર મૂર્તિ-શ્વેતાંશુર નૈત્ર મૂર્તિ-ની જ સિદ્ધ કરે છે.

હેઠે આ મૂર્તિ ક્યા સમયની છે તે નોઈએ: મૂર્તિના લેખમાં રહેલું—“વૈરિગણ” શાશ્વત આ મૂર્તિની પ્રાચીનતાને સિદ્ધ કરે છે. કદમ્બસુત્ર સ્થવિરાવલીમાં ઉલ્લેખ છે કે આર્ય વજસ્ત્વામાંથી વૈરિગણા તીકલી છે. આ વૈરિગણા પણ શ્વેતાંશુર નૈત્રાચાર્યમાં જ પ્રવર્તે છે. વૈરિગણુ શાશ્વત સૂચવે છે કે વજસ્ત્વામાંની પણીના સમયની આ મૂર્તિ છે. ભીજું વૈરિગણુ પણીની શાખાનો ઉલ્લેખ નથી એથી ભીજું શાખાઓ નીકળી તે પહેલાંની આ મૂર્તિઓ છે.<sup>૧</sup> એના લેખની આલીલીપી પણ એની પ્રાચીનતાનું સઅલ કારણ છે.

હેઠે આપણે ખીજુ મૂર્તિઓનું વર્ણન નોઈ લધાયો.

ખીજુ તણે મૂર્તિઓના ફોટો જે ‘ભારતીય વિદ્યા’માં પ્રકાશિત થયા છે તે મૂર્તિઓ પણ નૈત્ર મૂર્તિઓ જ છે એમ જણાય છે. શ્રીયુત શાસ્ત્રીજીએ આ મૂર્તિઓને પણ બૌદ્ધ મૂર્તિ ફરાવા પ્રયત્ન કર્યો છે પરંતુ તેમાં તેઓ ભૂલ્યા જ છે.

(૧) ચિત્ર નં. ૫ માં આપેલી શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુની મૂર્તિ છે, જે નૈત્રોના ત્રૈનીશમા તીર્થિકર તરીકે પ્રસિદ્ધ છે. સુંદર સિંહાસન ઉપર નાગરાજ એડા છે અને અને આજુ એ દેવતા છે. ઉપર નાગદ્યાની સુંદર-મનોદર આચૃત છે. તેવીસમા તીર્થિકરની આવી નૈત્ર મૂર્તિઓ ધર્મ ટેકાણે મળે છે. મારવાડનાં ભાદ્યશામાં આવી મૂર્તિઓ વિદ્યમાન છે. શાસ્ત્રીજ ડાયી તરફની મર્તિને ઝુદ્ધ ધર્માંતુયાથીની દેવીમૂર્તિ માની આ આપી મૂર્તિને બૌદ્ધ દેવની દેવાવા મારે હે પણ એ તેમની ભૂલ છે. એ દેવીમૂર્તિ નૈત્રધર્મના આવીશમા તીર્થિકરના શાસનની અધિકાર્યિકા અધિકા દેવાની મૂર્તિ છે. શ્રી પાર્શ્વનાથજીની મૂર્તિના આસનમાં અધિકાનું સ્થાન નોઈ લાય કોઈ ને આશર્ય થાય, પરંતુ ચંદ્રાવતીનાં અદિયોરમાં અમે નૈત્ર મૂર્તિઓ નોઈ છે તેમાં ધર્મિની નૈત્ર મૂર્તિઓ સાથે ગોમેધ યક્ષની અને અભિકાની મૂર્તિઓ નોઈ છે. દશમી-અગિયારમી સહીની અને તેની પહેલાંની ધર્મિની નૈત્ર મૂર્તિઓમાં અલિકાનિત યક્ષની અને અભિકાની મૂર્તિ નેવાય છે. એટલે આ મૂર્તિઓ નોઈ ગલરાવાની કે અન્ય દેવની મૂર્તિં માનવાની લગારે જરૂર નથી. આ મૂર્તિ પણ નૈત્ર મૂર્તિ જ છે.

સુંદર નાગરાજની રચના અને તેનું આસન તથા પાછળના ભાગની ડારણી અને ફણ્ણાની રચના આ અધું આ મૂર્તિ શ્રી પાર્શ્વનાથ અગ્રવાનની મૂર્તિ છે એમ જ સિદ્ધ કરે છે. મુદ્દેવની આવા આકારવાળા મૂર્તિ નથી અનતી તેમજ ઝુદ્ધ મૂર્તિમાં વબ્ર-ઉત્ત-રીયવન્ન આહિ જે હોય છે તેમાંનું આ મૂર્તિમાં કશું નથી મારે એ નૈત્ર મૂર્તિ જ છે.<sup>૨</sup>

૧ ‘ભારતીય વિદ્યા’માં શ્રીયુત નવાખ આ મૂર્તિઓ ઉપર વૈરિગણુ રાખથી શ્રીવજસ્ત્વામિની વિદ્યમાનતામાં આ મૂર્તિઓ બની હોવાનું જણાવે છે.

૨ એક સમય એવો હતો કે ધર્મા નૈત્ર તીર્થરોની મૂર્તિના પરિકરમાં અભિકા હોને સ્થાન અપાણું હતું. આવી નૈત્ર મૂર્તિઓ ઢાક પર્વતની ગુફાના અડકની ભીતમાં કોતરેલી છે. મથુરાના કંકાલીશવામાંથી નિકલેલી નૈત્ર મૂર્તિઓ અને તાલંબનગરિના નૈત્રમહિરમાંની મૂર્તિઓમાં પણ અભિકાદેવી દેખાય છે.

[ ४१२ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ ७८६ ६ ]

आवीज रीते थील ऐ मूर्तिओ। माटे पण शास्त्रीज्ञों शांकांगो ब्रह्मानी, एक मूर्ति भाटे तो लघे छे के “लांगी झुटवाणा क्वान छे.” आ उपरथी तेने औष्ठ मूर्तिओ। इरावताने प्रथन कर्त्तो छे। परंतु तेमना जेवा पुरातत्त्वना अभ्यासीने तो भयुराना कंकली-ठीलामांथी नीडेली प्राचीन नैनमूर्तिओ। जेवाथी सहज रीत्या समज शक्षेहो के प्राचीन नैन मूर्तिओ। काननी झुटीओ। लांगी ज छती। आजे पण घाणां नैन मंहिरमां के जेमां प्राचीन मूर्तिओ। छे त्यां काननी झुट लांगी छे एम प्रत्यक्ष हेखाय छे। परिक्रमां रहेला शासनरक्षक देव-देवियोना आकारनु औष्ठ शासनरक्षिकाओ। साथे साम्य जेहाँ डाइ पण मूर्तिने औष्ठ मूर्ति कहेनी ए उचित नथी। औष्ठ मूर्तिनां चिह्नो अने नैन मूर्तिनां चिह्नोमां साइ तारतम्य जथाई आवे छे, अने ए तारतम्य अहीं होवा छतां तेने लक्ष्यमां लीधा सिवाय उपलक दृष्टि मानथी नैन मूर्तिओ। औष्ठ मूर्तिओ होवानु लखवुं ए सज्जन पुरातत्त्वविहेने शोलास्पद नथी।

पुरातत्त्वना आचार्य श्रीभान् जिनविजयगुना अध्यक्षपण्यमां नीडणता “लारतीय विद्या” नामक त्रैमासिकमां श्रीयुत सारालाई नवाए शास्त्रीज्ञानी अधी दृश्येनो। ज्वाअ आएयो। छे अने भडुडीना डोट्यार्थी स्थानमांथी नीडेली चारे मूर्तिओ। नैन मूर्तिओ। ज छे एम यरायर लिङ्क कुर्याए। श्रीयुत शास्त्रीज्ञ अने अन्य जिग्यासु विद्वानो ते देख जेह सत्य स्वीकारे ए शुभेच्छा साथे हुं विरमुं छु।

आ देख लभ्वामां मे श्रीयुत नवाअना देखनो उपयोग कर्त्तो छे, अने मूल मूर्ति के जे अमे त्यां जेह हती ते सिवायनी वज्ञे मूर्तिना तेमणे रजु करेला द्वेषाना आधारे ज जे आ मूर्तिओ। माटे लभ्युं छे।

## परिशिष्ट

आ चारे मूर्तिओ नैन मूर्तिओ। ज छे ए संबंधी हुं लभी गयो छुं। आ पछी विलपुर युद्धक्षतांतमांथी<sup>१</sup> भने जे हस्तक्ष भली छे तेनो सार अहीं आपुं छु।

जे डोट्यार्कना भादिर पासेथी आ चारे नैन मूर्तिओ नीडणी छे ते भडुडीनी नल्लक करतां खडायत गामनी वधु नल्लकमां छे। आ खडायत नगरमांथी खडायता खालेणु अने खडायता वषिङ्गानी उपत्ति थर्च छे। आ खडायत गामनु असल संस्कृत नाम घुडायतन नगर हतुं। डोट्यार्कतुं भादिर तेनी पासे ज छतुं। ए भादिरे जतां रस्तामां वज्ञे स्थाने ज्ञानां भक्तानोना पाया, दीवाली वगेरे नजरे पडे छे। भादिरी चोतरक पहेलां गाम हशे एम लागे छे। अहीथी एक गाउ दूर साम्राज्यी (साम्राज्यी) नदी वहेती हती। नदीनु वहेणु गाम तरइ आवत्तुं गयुं, नदीना वेग सामे गाम टडी न शक्युं अने एना प्रवाहोना भाराथी गाम घरसत थयुं। गामनी वस्ती पण चाली गध। प्राचीन भडुडी माटे पण आम ज अन्युं छे। छेले १६६३ ती लयांकर रेल समये तेनां आँडियेश-कुवा वगेरे हेखायां हतां।

आ खडायत गाम वीजपुरथी अजिन घूम्यामां लगभग चार माहाल दूर छे। आ गाम लगभग ऐ हजार वर्षथी पण वधु प्राचीन छे एम कहेलाय छे। आनुं नाम त्रांस्यावती पण भने छे। अत्यारे डोट्यार्कना भादिर तरक जतां रस्तामां खडायतनां भक्तानोना।

<sup>१</sup> यागनिष्ठ शास्त्रविशारद कैनाचार्य श्री युद्धिसागरसूरियविवित।

અંક ૧૧ ]

## મહુડીની કૈન પ્રતિમાઓ

[ ૪૧૩ ]

પાયા વગેરે નજરે પડે છે, જે પુરાતત્ત્વજોને માટે અહુ જ રસપ્રદ ધતિહાસ પૂરો પાડે તેમ છે. ત્યાં ખોદકામ થવાથી ગુજરાતની એ પુરાતન મહત્વરશાલી નગરીનો અણોદ્ધાર થાય તેમ છે.

આ નગરીમાં ડાકોરેનું શાલ્વ હતું. ચાવડાઓએ પણ અહો' સત્તા જમાવી હતી. છેલ્લે મુસલમાનોના આકમણોથી<sup>૧</sup> આ નગરીનાં વૈભવ, મહત્ત્વ અને ગૌરવ નાણ થયાં અને તેમાં જે કાઈ કચાશ રહી હતી તે સાખરમતીના પ્રવાહે નષ્ટ કરી. ત્યાં રહેતા ખડાયતા આદિષો અને ખડાયતા વાણીકા અન્યત્ર ચાઢ્યા ગયા અને વર્તમાન નાનું ખડાયતા ડાકોરેને વસાન્યું છે ને તેમની વર્ષતી જ વધુ પડતી છે.

આ ખડાયતન નગરનું ડાટયાર્કનું મહિર અત્યારે પણ એક ઊંચા ટીંબા ઉપર જેખું છે. તે ખડાયતના ધાર્યાદેવ છે. સાખરમતીના પ્રવાહે ચોતરફ ડાતરો કરી નાખ્યાં છે. ચોતરફ ધીલામણ્ણ મોટા મોટા ગોંધા (વાંધા) નજરે પડે છે. નીચે જ પોતાનો વિશ્વાલ દેહ પાથરી સાખરમતી સ્ત્રી પડી છે, સામે જાડી છે અને ત્યાં એક સર્વ કુંડ છે. કહે છે કે અહોથી પણ દૂર સાખરમતી હતી તેને બદલે આજે કુંડ સામે પાર દેખાય છે.

આ ડાટયાર્કના મહિરનો પણ નાશ થઈ જશે એ કુરથી અકલજનોએ મહુડીથી એ ઘેતરવા દૂર નવા ડાટયાર્કનું મહિર બનાવ્યું છે. જુના ડાટયાર્કનાં દર્શન કરવા અહુ જ અલ્પ ખડાયતો જાય છે. આ પુરાણા સ્થાનેથી પહેલાં પણ જિનવરેન્ડ અનિતનાથ ભગવાનની ચાર હાથ મોટી પ્રતિમા નીકળી હતી. એટલે હમણ્ણાં નીકળેલી આ પ્રતિમાઓ પણ નૈન પ્રતિમા હોવાની જ સંભાવના બઠો શકે છે, નહિ કે ઔદ્ધ પ્રતિમાઓની.

અહીં વસનાર અને અહીંથી જ નેમની ઉત્પત્તિ થઈ તે ખડાયતોએ નૈન પ્રતિમાઓ ભરાવ્યાના ઉલ્લેખાં જૂએ—

(૧) “૧૩૭૫ વર્ષે આષાઢ શુદ્ધ દ ખડાયતિ જ્ઞાતીય શ્રે. બનદેશ ભાર્યા લાચ્છ પુત્ર ધિણાકેન શ્રી આદિનાથ વિબ કા. પ્ર. સુરિમિ:

(૨) સં. ૧૩૭૦ વર્ષે આષાઢ શુદ્ધ દ ખડાયતિ જ્ઞાતીય વિદે જયતજ્ઞાહ શ્રેયસે શ્રેણો ધીણાકેન શ્રી નમિબિંબ કારિતં ॥

—યુદ્ધસાગરસ્થુરિકૃત ‘નૈન ધાતુ પ્રતિમા લેખસંગ્રહ’ લા. ૧, પૃ. ૨૪૬

પ્રથમ લેખનો ભાવાર્થ એ છે કે સં. ૧૩૭૫ માં અષાઢ શુદ્ધ દ ખડાયતા જ્ઞાતીય શેડ વનહેવની ભાર્યા લક્ષ્મી—(લાચ્છી)ના પુત્ર ધીણુક શ્રીઆદિનાથપ્રભુનું પિંઅ ભરાવ્યું.

થીજા લેખનો ભાવાર્થ એ છે કે સં. ૧૩૭૦ માં અષાઢ શુદ્ધ દ ને દિવસે ખડાયતા જ્ઞાતીય વિદે જયત શાહેના સમગ્રાંશી શેડ ધીણુક શ્રી નમિનાથ પ્રભુનું પિંઅ ભરાવ્યું છે.

એટલે ખડાયતાઓ નૈન હતા અને એ સ્થાનેથી મૂર્તિઓ મલી છે તે દર્શિયે પણ આ મૂર્તિઓ નૈન મૂર્તિઓ છે એમ સિદ્ધ થાય છે.

આ મૂર્તિઓમાં ધર્મચક્ર છે એ નેધરને શ્રીયુત શાસ્ત્રી મહોદય આ મૂર્તિઓને ઔદ્ધ મૂર્તિઓ માને છે વા માનવા પ્રેરાયા છે પણ ઔદ્ધ મૂર્તિમાં જ ધર્મચક્ર હોય એવું કશ્ય નથી. વાસ્તવિક રીતે નેધરને તો નૈન મૂર્તિઓમાં જ ધર્મચક્રની સંભાવના વધુ છે કારણુક

૧ સં. ૧૩૫૬-૫૭ માં અલાભદીન ખુનીએ પાઠ્ય, સિક્ષપુર, વીલપુર, વીસનગર અને આ ખડાયતનાં મહિરો તોડ્યાં હતાં.

[ ४२४ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५६ ]

जैन धर्म शास्त्रमां ऐवां प्रभाणो भले हे के तीर्थंकरने चोत्रीश अतिशयो हेय हे तेमां देवकृत ओगणीश अतिशय भनाय हे तेमां धर्मचक्र पणु तीर्थंकरनी आगण चाले हे ऐवो अतिशय हे. जूणो कुलिकालसर्वत्र श्री हेमचंद्रसैखरलकृत वोतरागरतोत्रनो चतुर्थं प्रकाश.

**“मिथ्यादृष्ट्यां युगान्तार्कः सुहृशाम्भृताञ्जनम् ।**

**तिलकं तीर्थकृलक्ष्म्याः पुरश्चकं तवैधते ॥ १ ॥**

भिथ्यादृष्टिओने प्रदत्यक्षणना सर्वती जेम संतापकारी अने सम्बद्धिओने अमृतना अन्जननी जेम शान्तिकारी, अने तीर्थंकरपणानी लक्षणीना तिलक समान ऐवुं धर्मचक्र, आपनी आगण दीपी रखुं हे. आवी ४ रीते श्रीजिनेश्वरसूरिविरचित ‘चांपद्वयरिति’मां पणु निमा उद्देश भले हे:

**सुररहयागुणवीसा मनीयसीहासां सपयवीदं ।**

**छत्ततय-इंद्रज्ञय-सियचामर-धर्मचक्राइ ॥**

**लावार्थ—**सुर-देवकृत ओगणीस अतिशयोमां, पादपीड सिद्धित भिषुभय सिंहासन, नणु छन, धन्दध्वज, सहेद चामू अने धर्मचक्राइ.

आवी ४ रीते जैनोना आगम-मूल शास्त्र श्री समवायांगमां पणु अतिशयोना वर्णनमां धर्मचक्रनुं वर्णन आवे हे.

गुजरातीमां पणु एक जैन कविराजे वर्ण०४ युं हे: “धर्मचक्र तुज आगण चले रे”

ऐले धर्मचक्र जैन तीर्थंकरोनी भूर्तिमां आलेखायेव जेऽ लगारे संशयमां पडवानी जडर नथी. अत्यारे अमदावादमां भांडवानी पोगमां नागलज्जुधरनी पोगमाना विशाल जिनमंहिरमां एक सुंदर धातुभूर्ति हे, तेमां पणु धर्मचक्र विद्यमान हे. श्रीमान् शास्त्रीज्ञ ते जेऽ “धर्मचक्र होवाथी आ औद्ध भूर्ति हे” ऐवो पोतानो आग्रह जडर सुधारी ल्ये, ऐम तेमना जेवा पुरातत्वना अब्यासी पासेथी आशा राखुं तो ते वधु पडती नहि ४ लेखाय.

जैन तीर्थंकरनी भूर्तिमां धर्मचक्र तो हेय ४ हे, परंतु ए धर्मचक्र आराधन नामतुं एक तप पणु जैनोमां विद्यमान हे. जूणो तपावली ला. १-२, वि. १६७४ ध. स. १६१८मां सुरतथी प्रकाशित. तेमां पु. २० तपस्या नं. ६३ “लधु धर्मचक्रवाल तप.” आमां उजमण्यामां लण्युं हे के “शैय सुवर्णभय धर्मचक्र ग्रनु आगण ठोकतुं” आवी ४ रीते पु. ५६ तपस्या नं. १५१मां धर्मचक्रवाल तप. आमां पणु उजमण्यामां “उजमण्ये रौप्य सुवर्णभय धर्मचक्र ठोकतुं” जणावेलुं हे.

जे धर्मना अनुयायी धर्मचक्रनुं तप करे अने तेना उद्यापनमां ग्रनु सन्मुख इपानुं अथवा सोनानुं धर्मचक्र अनावाने यावे ते धर्मना धृष्टेवनी भूर्तिमां यदि धर्मचक्र आलेखायेलुं भले तो तेमां आवर्य पामया जेवुं सुं हे? आ धर्मचक्रथी अवकृत भूर्ति जिनभूर्ति ४ हे एमां लगारे संदेह नथी. आ भूर्तिमां औद्धधर्म भान्य एक पणु लक्षण अंकित नथी. मात्र धर्मचक्रथी सुशोभित होवाना कारणे ४ जैनभूर्ति नथी एम उहेवुं ए लगारे उचित नथी. शिलालेख जैनभूर्तिनी सिद्ध करे हे, चक्रुओ अने शरीरनी आकृति जैनभूर्ति होवानुं सिद्ध करे हे. आ अद्यु जेतां आ भूर्तिए जैनभूर्तिए ४ हे एमां लगारे संदेहेने स्थान नथी.]

# કટલાક ટખાઓની પુણિપક્તા

સાંચાડક—મુનિરાજ શ્રી કાંતિસાગરજી, સિવની (સી. પી.)

નૈન વાહુમયના અનેક પ્રકારોમાં ટખાઓનો પણ એક પ્રકાર છે. ટખાઓ શા માટે અનાવતામાં આવતા દરો! જો પ્રથમ સહેલે ઉપરિથિત થાય છે. એનું પ્રધાન કારણું એ છે કે પ્રાકૃત-સંસ્કૃત ભાષાથી અનલિઙ્ગ જોવા મળુંદો સરળતાથી શાસ્કોનો સામાન્ય અર્થ સમજું રહે એટલા માટે મૂળ શાસ્કોને અનુલક્ષ્યિતો ડેટલીક ટીકાઓ લોકભાષા જેણા કે— શાખસ્થાની, ગુજરાતી, લિન્હીમાંનિર્માણ કરવામાં આવે છે, નેને ટખા કે ભાષાવાયોધ તરીકે જોણાયામાં આવે છે. આ ટખા કે ભાષાવાયોધનું એ દ્વારિએ મહત્વ છે: (૧) શાસ્કોનો અર્થ સમજું રહાય છે અને (૨) તરકાલીન ભાષા સાહિત્ય પર ટખાઓ ધર્ણે સારો પ્રકાશ હેડે છે. ડેટલીક જોવા પણ ટખાઓ મને મળ્યા છે કે જેમાં અન્યરચયિતાનો સંક્ષિમ પરિચય પણ મળ્યો રહે છે. પ્રાચીન નૈન જ્ઞાનમહિરોમાં સેંકડો ટખાઓ મળ્યો આવે છે. આ ટખાસાહિત્યની ને એક અતિ સંક્ષિમ નોંધ કરવામાં આવે તો પણ મજન્તું એક પુરતક તૈયાર થાય તેમ છે. સાક્ષરવર્ણ શ્રીમાનું મોહનલાલ લીલાંડ હેશાઈ B. A., L. L. B. એ સંઘર્ષી વિશ્વરૂપ નિષ્પત્ત તૈયાર કરી “નૈન ગુરુજી કવિઓ” ભાગ ઉ માં આપવાના છે, મેં મારા વિદાર દરમ્યાન ને ને સાહિત્ય એકન કર્યું તેમાંથી ટખા સંખ્યાએ ડેટલીક હુકીકત અને રજુ કરવામાં આવે છે; ભાષાવાયોધનો પણ આમાં સમાવેશ કર્યો છે.

સી. પી. અને વરાડ પ્રાન્તમાં નૈનોનું સાહિત્ય સારા પ્રમાણમાં ઉપલબ્ધ થાય છે. મેં અત્યાર સુધી નાગપુર, હીળણુંદાટ, કામણી, સિવની, બાંદુનાં જ્ઞાન-મહિરો તપાર્થાં છે. તેનું સંક્ષિપ્ત વિવરણ “સી. પી. ઔર બરાર પ્રાન્તમે સુરક્ષિત જૈનવાડ્યમય” નામે એક મોટા નિષ્પથમાં આપેલ છે. ઉપરાની તમામ જ્ઞાનમહિરોનાં સુચિપત્રો, પુણિપક્તાઓ વગેરેનો મેં સંચદ કર્યો છે. અહીં ૧૭મી અને ૧૮મી શતાબ્દિના ટખાઓની પુણિપક્તાઓ આપવામાં આવે છે. ઐન ટખાઓનું વર્ણન આગળના અંકમાં જોઈશું.

## સત્તરમી સદીના ટખાઓ

(૧) ભક્તામર ભાલાવણોથ પત્ર ૨૮

સંવત ૧૬૦૧ વર્ષે પોષ સુદિ ૧૪ શ્રીબુધે લિખિતા.

આ ટખો ગુજરાતી ભાષામાં છે, તેના અક્ષરો સુંદર છે, જો મારા સંગ્રહમાં છે.

(૨) નવતત્ત્વ ભાલાવણોથ પત્ર ૬, આ અથ મારા સંગ્રહમાં છે.

સંવત ૧૬૦૬ વર્ષે ચૈત્ર સુદિ પઢિવાદિને પં. ગોપાલદાસ.

(૩) સંભુષ્ણી ટખો પત્ર ૪૭, આ અથ નાગપુરના ભાંડારમાં છે.

સંવત ૧૬૬૨ વર્ષે પોષ શુદિ ૧૪ દિને રવિનંદન વાસરે લિખિતે શુભે ભવતુ | પંડિત મતહિકાચક્રવર્તી સુરાચાર્ય શ્રીલક્ષ્મીરાજગણ દિદ્ય દિદ્યાળુ ||

ઉપરોક્ત પ્રતિ ૧૭૬૦માં ન્યાયસાગરને સીરીઝીના શ્રાવકે વહોરાથી અને ૧૭૬૨માં

[ ४१६ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष ६

न्यायसागरकुण्डे सुणवर्द्धनने अमदावादामां अध्ययन मार्गे आपा. (भृगु पुष्पिका मार्गे स्त्री. पी. और बरारमें सुरक्षित जैनवाह्नमय नामों देख लेयो.)

(४) भूतपरीक्षा पत्र ३, आ ग्रंथ गारा संग्रहमां हे.

संवत् १६८३ वर्षे १ दिने बार हीते (रविवारे)

उपरनी भूतपरीक्षा भृगु संरकृत लापामां २३ श्लेष्मां शुभ्रित हे. तेना उपरनो आ एओ ग्रामीन गुजराती लापामां हे.

(५) ज्यतिहुच्यु भासावणीष्ठ, पत्र ६, आ ग्रंथ नागपुरना ज्ञानभासिरनो हे.

संवत् १६९५ वर्षे श्रावण वहि द्वितीयायां श्रीज्ञेसलमेस्मद्ये वा० श्रीदयाकीतिगणि शिष्य कमलहर्ष मुनिना लिखितम्।

(६) द्वारगिरित वीदस्तत्त्वन एओ पत्र १८, आ ग्रंथ गारा संग्रहमां हे.

“सं० १६९६ वर्षे फायुण शुद्धि द दिने संग्रामपुरमद्ये”

उपरोक्त रत्नन शूटी गुजराती लापामां शुभ्रित हे अने तेनी ८१ गाथा हे.

निर्भातानुं नाम सुखन्यु नयी, तो पछु लेणनकाण उपरथी ग्रामीन जणाय हे. आमुं य स्तवन यथावदारो प्रेक्ष इरवानी लापाना हे.

(७) उपदेशसालाईषो पत्र २७, आ ग्रंथ नागपुरना ज्ञानभासिरमां हे.

“महोपाध्याय श्रीमानुच्छ्रवणि, तत्पदे महोपाध्याय श्री. ६. श्री. सिद्धिचंद्रगणि गुरुभ्यो नमः ॥ ८ ॥

आ ग्रमाले लाल शालीया शमो आलेषेव हे. सिद्धिचंद्रकुण्डी परंपरावाणा डाढ मुनिए लेषेव जणाय हे.

(८) ज्यतिहुच्यु एओ पत्र ३

प्रतुत एओ १७ भी सदीना लेणेवा जणाय हे. आ चिचाव पाण दशानुसंध आयागांग, धर्मादि आगमेना टपाएओ १७ भी सदीना लेणेवा उपवास्य शाय हे.

(९) घृपंशारिहा भासावणीष्ठ पत्र १४, आ ग्रंथ गारा संग्रहमां हे.

इति श्रीपद्मचाशिका सम्पूर्ण ए हरजी लिखिते ॥ वरहीया साह अमरसी पुत्र साह नेणसी पठनार्थ ॥ संवत् १७००० (?)

उपरनी प्रति १७०० लग्जस लेषेली जणाय हे. एानी आपा गुजराती हे.

## अठारभी सदीना एओ

(१०) संथहुषी भासावणीष्ठ पत्र १३, आ ग्रंथ गारा संग्रहमां हे.

संवत् १७०९ वर्षे पोष मासे ९ दिने लिखितं श्री—

उपरनी संग्रहणीना भृगुना कर्ता भक्तपारि हेमचंद्रसुरि हे. आ ग्रनिमां वाङुंय चित्रो कक्षापूर्ण आलेषेव हे, तेनो परिय हु “केळीक दस्तविजित सचिन प्रतिओ” नामक निष्ठमां करानीश.

(११) अउशरणपथना एओ पत्र १०, आ ग्रंथ गारा संग्रहमां हे.

संवत् १७२२ वर्षे लिखितं परोपकाराय ।

અંક ૧૧]

## દેલાદ શાખાનો પુણીકા

[ ૪૧૭ ]

ઉપરની ગ્રત વિનયવિજયશુના શિષ્યે લખેલ જાણાય છે. આદિ ભાગમાં “॥૫૦॥  
મહોપાદ્યાય શ્રીવિજયવિજયસાણચરણબ્રહ્મલેખ્યો નમઃ શ્રી ગુરુભ્યો નમઃ”  
આ પ્રમાણે ઉલ્લેખ છે. એજ ગણ આ પ્રમાણે ચાર ઉલ્લેખ છે:—

(૧) સંવત ૧૭૭૯ વર્ષ પુસ વદિ ૧૪ દિને પંડિત શ્રી સત્યવિજયજી દેવંગત થયા વાર કુદ્ધવારે પહેલા એકિર માંહિ કાઢ કર્યાં ।

(૨) સંવત ૧૭૩૮ પં. શ્રી જિનવિજયજીગણ જેઠ વદિ ૩ દિને દ્વેવંગત થયા હૈ ।

(૩) સંવત ૧૭૩૨ જેઠ વદિ ૧ કુંગવિજય દેવંગત ।

(૪) સંવત ૧૭૬૨ મગસિર વદિ ૭ સાતમા દિને પં. શ્રી સૌભાગ્યવિજય-ગણ દેવંગત ॥

(૧૨) સંભ્રહુણી બાદાવણોથી પત્ર ૩૦, આ અંથ મારા સંશેષમાં છે.

સંવત ૧૭૨૨ વર્ષ માગસરમાસે કૃણપદ્ધે તિથો અષ્ટમીદિવિને શનિવારે પંડિત શ્રીનેમિવિજયગણ શિષ્ય ગણ જ્ઞાનવિજ્ઞયેન લિપીકૃતા । સુરઢાવાસ નગરે શ્રીસુવિપિનાથપ્રસાદાત ।

(૧૩) યેગચિતાભષિ બાદાવણોથી પત્ર ૩૦, આ અંથ મારા સંશેષમાં છે.

ઇતિ મહોપાદ્યાય શ્રી રત્નરાજગણ શિષ્ય વાચનાચાર્ય નરસિહાગણ કૃત બાલાવબોધ સમાપ્ત: ૧૭૩૦ વર્ષે ।

ઉપરેક્ષત અંથ પૈલાડ નિપુણ છે.

(૧૪) ઝાતાખૂન ટ્યો પત્ર ૨૪૨, આ અંથ નાગપુરના જ્ઞાનભંડારમાં છે.

સંવત ૧૭૩૪ કાર્તિક માસે કૃણપદ્ધે સમસ્યા તિથો અર્દ્ધવારે લિપીકૃતા સકળપંડિતપ્રબીર પ્રધાન પંડિત શ્રી ૬ એજવિજયગણિ ત. શિષ્ય પંડિત શિરોમળણ શ્રી ૬ શીલવિજયગણિ ત. શિષ્ય એજવિજયગણિ ખેમાવિજયેનાલેખિ । શ્રીપાર્શ્વ-નાથપ્રસાદાત. શ્રીકચ્છુદેશો શ્રી રાગડ શ્રી રાયધણ રાજ્યે શ્રી કંથરિજા ગ્રામે શ્રેયસ્તુ ॥

(૧૫) દેવસીરાઈ ૫૦ ટ્યો પત્ર ૧૬, આ અંથ નાગપુરના જ્ઞાનભંડારમાં છે.

ગ. પેમવિમલવાચનાર્થી ઇંદ્ર લિપીકૃતાં લેખકાપાઠકારો: શુભે ભવતુ ।  
સંવત ૧૭૩૭ વર્ષ માહ વદિ ૨ દિને પૌર્ણિમાસરે શ્રીકન્ધુપુર (સુરત?) મધ્યે,  
જયો વિજયો ભવતુ કલ્યાણમરતુ ॥

(૧૬) નવતાત્ત્વ બાદાવણોથી પત્ર ૬, આ અંથ કામગીરા જ્ઞાનભંડારમાં છે.

સંવત ૧૭૬૩ વર્ષ મિનિ વૈશાખ દિને લિહેણિ યણિ ધીરમાગરેણ શ્રીફલ-  
વદ્ધિનગરે, શ્રીશ્રી ॥

(૧૭) નવતાત્ત્વ બાદાવણોથી પત્ર ૬, આ અંથ કામગીરા જ્ઞાનભંડારમાં છે.

સંવત ૧૬૬૬ વર્ષ ચૈત્ર સુદિ ૧

[ ४१८ ]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[ ७५६ ६

(१८) ६७वीस स्थान प्रकरण ५, ६, आ ग्रंथ मारा संग्रहमां है.

संवत् १७८७ वर्ष मार्गशीर्ष बलेतरे पक्षे चतुर्दशी, कर्मवाप्यां लिखितं पुस्तिका पं. खेतसीगणिना श्रीफलवर्दिनगरीमध्ये ॥

(१९) वैराग्यशान्ति ६४ो पत्र २६, आ ग्रंथ नागपुरना ज्ञानसंदरभां है.

संवत् १७८८ वर्ष शाके १६६३ प्रवर्तमाने आषाढ मासे कृष्णनवम्यां मेदपाटदेशो पांडुनानगरे चाहुमसीस्थितां पंडितप्रयर श्रीदुर्गादासजी तत् शिष्य जगरूपमुनिना लिपीकृता स्वज्ञामवृद्ध्यर्थी ॥

(२०) ज्यतिहुम्मण ६४ो पत्र ११, आ ग्रंथ नागपुरना ज्ञानसंदरभां है.

संवत् १७९१ कार्त्ति सुदि ६ रात्रो श्री वीक्ष्मपुर (बीकानौर) मध्ये लि. पं. रुघनाथ ॥

(२१) विपाकसूत्र ६४ो पत्र ७३, आ ग्रंथ नागपुर ज्ञानसंदरभां है.

संवत् १७९१ वर्ष शाके १६६४ प्रवर्तमाने मिति मिगमिर सुद २ दिने गुरुवासरे श्रीविकानेरनगरमध्ये पं. जसवंत लिपीकृतं श्रीरस्तु ।

पंडित जसवंत नागपुरना अनेक पुस्तकोना लेखितमांना ज्ञेक है. आ शीते अहो २१ ट्यूग्रोनी पुणिप्रायो आपवामां आनी है. आ उपरात गीतु पुणिप्रायो मणी आवशे ते हवे पक्षी यथावद्वाश आपवामां आवशे.

~~~~~

## ऐतिहासिक दृष्टिसे प्राचीन जैन वाङ्मयका महत्व

और

उसके संशोधनकी आवश्यकता

लेखक—श्रीयुत भा. रं. कुलकर्णी बी. प., शिरपुर, (प. खानदेश)

जैनधर्मके प्राचीन साहित्यकी ओर जैनेतर विद्वानोंका ध्यान बहुत धीरे धीरे खींचा जा रहा है। पौराणिय और पाश्चात्य विद्वानोंने जितने परिश्रम पूर्वक बौद्ध धर्मका अभ्यास और आदोनन किया है उससे कई गुना कमती अभ्यास जैन साहित्य का किया है। वालानुक्रमसे जैनधर्मका बौद्धधर्मसे उद्योग्यत्व विद्वानोंमें संमत हो चुका है, फिर भी भारतीय पाठशालाओंमें पढ़ाये जानेवाले अनेक पाठ्य पुस्तकोंमें इस विषयमें विपरीत विधान<sup>१</sup> पाये जाते हैं। जैनधर्म यह सनातन धर्म है ऐसा भी दावा किया जाता है, किन्तु अद्वाके एक मात्र सहारे पर इस प्रकारका दावा अन्य धर्मीयोंके मुकाबलेमें कैसे होता है? आज कलके भौतिक विज्ञानमय और बुद्धिग्रधान जगतमें सनातनवर्द्धार्थ अर्थ प्राचीनतम ही हो सकता है इस लिये जैन पंडितोंको

जैनधर्म यह बौद्धधर्मसे अवधीन है और महावीर स्वामीने जैनत किया ऐसे विधान अनेक पाठ्यपुस्तकोंमें पाये जाते हैं।

**अंक ११ ] श्रीतिहासिक दृष्टिरो प्राचीन जैन वाद्यस्थापा भाष्यम् [ ४९६ ]**

चाहिये कि वे कुछ खोज भाल करके ऐसे प्रमाण विद्वानोंके सामने प्रकट करें जिनसे जैनधर्मकी प्राचीनता सर्व सामान्य तर्क प्रणालीसे प्रस्थापित हो। और उसके द्वारा भारतीय अर्थ संस्कृतिका प्राचीनत्व सुट्ट हो।

भारतीय संस्कृतिकी ओर पाञ्चाल्य विद्वान बहुत सार्शपतासे देखते थे और देखते हैं। किन्तु संस्कृत साहित्य और विद्वानः वैदिक वाचमय के प्रकाशन, परीक्षण और तुलनात्मक अध्याससे वह सार्शपता बहुत कमती होती जा रही है। और भारतीय संस्कृतिकी स्वर्थपूर्ण मीलिकता तथा प्राचीनता प्रस्थापित हो रही है। मैं इस छोटेसे लेख द्वारा यही बताना चाहता हूँ की जैन पंडित इस कार्यमें पूर्ण सहकार करके यशके अधिकारी हो सकते हैं।

‘वेदाङ्ग ज्योतिष’ नामका एक छोटासा ज्योतिष ग्रंथ विद्यमान संस्कृत ज्योतिष ग्रंथोंमें प्राचीनतम समझा जाता है। उसकी भाषा प्राचीन संकेतमय और समझनेको इतनी क्षिण है की इ. स १८७७ से आजतक इस ३५—४० श्लोकबाले छोटेसे ग्रंथका, डॉक्टर श्रीबो, महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी, ज्यो. शं. वा. दीक्षित, लो. टिलक इत्यादि विद्वानोंके अनेकानेक प्रयत्नों पर भी संपूर्णतः अर्थ नहीं लग सका। किंतु आजतक अशक्यप्रायः समझा गया यह चमत्कारस्वरूप कार्य महामहोपाध्याय डॉ. शामशास्त्री (मैसोर) ने सरलतासे कर डाला और वो भी जैन ज्योतिष ग्रंथोंकी सहायतासे। सूर्यप्रकृति ज्योतिषकरंडक और काललोकप्रकाश थह वे तीन जैन ग्रंथ हैं। डॉ. महाशास्त्रीके ध्यानमें यह आया की वेदांग ज्योतिषकी पद्धति और उपर्युक्त जैन ज्योतिष-ग्रंथोंकी पद्धतिमें स्पष्ट साम्य है और वेदांग ज्योतिषके जो जो श्लोक आज तक दुर्बोध समझकर भूतपूर्व विद्वानोंमें छोड़ दिये थे वे इन जैन ग्रंथोंकी सहायतासे सुगम और सुसंगत ही नहीं किंतु अर्थपूर्ण प्रतीत होते हैं। इस तरहसे अगम्य वेदाङ्ग ज्योतिषको संपूर्ण तथा सुगम करनेवाले प्रथम संशोधक, ऐसा डॉ. शामशास्त्रीका सुविख्यात नाम जैन ग्रंथोंकी सहायतासे ही हुआ है।

इस उपर्युक्त वेदाङ्ग ज्योतिषके संपादन कार्यमें एक छोटीसी विसंगतता ज्योतिष करंडकके श्लोक २८८ के विषयमें हो गई है।

“उक्तं चैतत ज्योतिष करंडे ( प. १९६ पदा २८८ )—

लग्नं च दक्षिणायनविसुवेसु ति अस्स उत्तरं अयणे ।

लग्नं साईविसुवेसु पञ्चसुवि दक्षिणं अयणे ॥ २८ ॥

छाया-लग्नं च दक्षिणायनविषुवेषु अपि अश्वे उत्तरमयणे ।

लग्नं स्वाति विषुवेषु पञ्चस्वपि दक्षिणायने ॥

दक्षिणायनविषुवेषु पञ्चस्वपि विषुवेषु अश्वे अश्विनीनक्षये लग्नं भवति ।”  
इत्यादि । वेदाङ्ग ज्योतिष पृष्ठ ५०

इस श्लोककी छाया और टीका मलयगिरिकृत है और उसका अंग्रेजी अनुवाद डॉ. शामशास्त्रीने ऐसा दिया है।

[ ४२० ]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५६ ६

'The Lagna of the five Vishuwas or equinoctical days in a yuga is the rise of the Ashwini Nakshatra in the Uttarayana and that in the five Dakshinayanas is the rise of the Swati Nakshatra.

—वेदांग ज्योतिष—पृ. ३०

उपरके दोनों अवतरणोंमें स्थित विसंगति यह है कि इस श्लोककी संस्कृत टीकामें दक्षिणायनमें आनेवाले विषुव दिनका नक्षत्र अश्विनी है और अंग्रेजी भाषांतरमें वही अश्विनी नक्षत्र उत्तरायण के विषुव दिनको जोड़ दीया गया है। डॉ. शामशास्त्रीको मैंने इस विषयमें पत्र लिखा था। आप अपना अंग्रेजी भाषांतर ही यथार्थ प्रतिपादित करते हैं, कारण स्पष्ट है कि-अश्विनी नक्षत्रमें उत्तरायणका विषुवदिन याने वसंतसंपात यह आजसे लगभग दो हजार वर्ष पूर्व होता था। अन्यथा संस्कृत टीकाकारने लिया हुवा अश्विनी नक्षत्रमें दक्षिणायनका विषुव याने शरदसंपात होनेको कमसे कम १४००० चौदह हजार वर्षोंसे अधिक काल हो गया<sup>१</sup> है।

ज्योतिष करंडकका यह श्लोक स्वभावतः क्लिष्ट और संब्रमोत्पादक है। उसमें दो बार दक्षिणायन शब्द आनेसे उसका संबंध अश्विनीसे लगाना या स्वातीसे लगाना यह एक जटिल समस्या है। और जैन प्राचीन साहित्यके अंदर आनेवाले ज्योतिष विषयके अन्यान्य प्रमाणोंका सम्यक् अभ्यास करनेवाले पंडित ही उसको हल कर सकेंगे।

चित्रा और स्वाति इनके बीचमें वसंतसंपात रहनेका प्रमाण तो संस्कृत ज्योतिष ग्रंथमें पाया जाता है। शुल्वसूक्रके भाष्यमें कर्कचार्यका पसा स्पष्टवचन<sup>२</sup> है। फिर उपर बताये हुए ज्योतिष करंडकके पद्ममें जो स्वातिका संबंध वसंतसंपातसे देखा जाता है वह भी यथार्थ क्यों न हो ?

यह एक ही नहीं ऐसे अनेकानेक प्रश्न उपस्थित होते हैं। आवश्यकता है उनकी ओर ध्यान देकर उस दिशासे जैन साहित्यका संशोधन करनेवालोंकी। जैन जनता धार्मिक है, उदार है और धनवान भी है। वह चाहे तो अपने प्राचीन धार्मिक साहित्यका ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्धतिसे अभ्यास करनेवाले विद्वानोंको प्रोत्साहन देकर भारतीय संस्कृतिका गौरव बढ़ानेमें अशाभाक् हो सकती है और होवे यह प्रार्थना है।

तोथ-आशा छे के जैन ज्योतिषना जाणुकार पूज्य मुनिशम्भे आनेमां पूज्यामां आवेद शंक्षा उपर विचार करी तेनो भुवासो द्वारा भोक्तवा कृपा करें। आवे भुवामो भण्शे तो अमे ते प्रगट करीयुं। —तंत्री

१ संपात विदृकी वाम गति है और नक्षत्रचक्रकी एक पूर्ण प्रदक्षिणा लगभग २६००० वर्षमें होती है। हाल वसंतसंपात उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रमें है अश्विनीसे उत्तरा भाद्रपदा तकका दो नक्षत्रोंका अंतर १४ हजार वर्ष पूर्व होता था।

२ पं. दी. चुलेट: 'वेदकालनिर्णय'।

# જૈનધર્મી વીરોનાં પરાક્રમ

લેખક—શ્રીધુત મોહનલાલ દીપચંદ ચોક્સી

( કમાંક ૬૮-૬૯થી ચાહુ )

મેવાડની ભૂમિમાં પણ ધર્મ નૈન હોવા છતાં શૌર્ય દાખવવાની વેગા પ્રાપ્ત થતાં જરા પણ પાછી પાની ન કરતાર વળિંગ વાણેનો રેણો નથી રહ્યો ! ઓશવાળ જ્ઞાતિમાં અવતસ્રમા ભામારાણ વા ભામારાના નામથી લાગેજ જનતા અગણ્યી હોય ! ‘રાજરસ્થાન’ના સુપ્રેસિદ્ધ લેખક કર્ણદિ ટોડ નિમન શાંદોમાં એ વીર પુરુષનો પરિયય આપે છે—

The name of Bhama Sah is preserved as the Saviour of Mewar. An Oswal by birth and a Jain by religion, he was the perfect model of fidelity and devotion. He was the Diwan of the illustrious Rana Pratap—an office which his family had hold for several generations.

દિંદના ધાતિહાસનો અભ્યાસ કરનાર વિદ્યાર્થી ‘ચિતોઽ પર સત્રાટ અકૃપરની અદાઈ અને મહારાણા પ્રતાપે અલારૂરીથી કરેલ અચાવ’ ગે ઔતિહાસિક આયતથી માહિત-ગાર હોય છે જ. એટલે ગે સંઘંધમાં આજું લખવું જરૂરી નથી. તેમ ‘ભામારા’ના સંઘંધમાં પણ નૈન-નૈનેતર લેખક દારા લખાયેલ ધર્ણા બ્યાન પ્રાપ્ત થતાં હોવાથી ગે સંઘંધી પણ વિરતાર કરવો જરૂરી નથી. આ લેખમાળાનો આશય તો એટલો જ છે કે ‘અહિંસા પરમો ધર્મથી જેનાં ધીજારોપાળ થાય છે એવા દ્વારા જૈનધર્મને પાળનાર પણ સમય આવે શરૂતન દાખવવામાં રંઘમાત્ર પીછેફક નથી કરતા. અદયત નૈનધર્મ એ નિતાંત અહિંસા પાલનમાં જ આત્મોનગતિ સમાયેલી છે, એમ કરે છે અને કુચનમાં દ્વારા કરુણા, કિંબા સકળ સુષ્ઠિના કીરીથી માંડી કુંજર સુધીના પ્રાણીવર્ગ પ્રત્યે અને રંગ કે જાતિનો બેદ ગણ્યા સિવાય સર્વે માનવ ગણું સાથે મૈત્રોભાવ ડેળવવાની વાતનેજુ અગત્ય આપે છે; એ સિવાય ઉચ્ચ ભૂમિકા પ્રાપ્ત થઈ શકી જ નથી એમ ડિંમનાં હાંદેર પણ કરે છે; એથી વિપરીત વર્તનમાં અર્થાત સમરભૂમિ પર શરૂસૈન્યનું લોહી રેડવામાં ચોક્સી ને ઉધારી દિંસા થાય છે અને એથી કર્મબધ પડે છે કે જે લોગવ્યા વિના આત્માને ચાલી શક્તિ જ નથી એમ પણ માને છે આમ છતાં જ્યાં સંસારસ્થ આત્માને શરૂદીય કે ક્રોદુંભિક દ્વરા આવી પડે તાં કાયરતાને અપેરી શરૂવિરતા દાખવવાનો માર્ગ ગ્રહણ કરવાનું સુચન કરે છે. નિર્ભળ, દરખોક કે હતાશ થઈ એસી રહે એ નથી તો સાચો માનવ કે નથી તો સાચો કેન ! કાયરોનો નૈનધર્મ હોઈ જ ન શકે ! ‘કર્મે સ્વરા સે ધર્મે સ્વરા’ જેવું પદ વાપરવામાં આવ્યું છે તે અવસ્થ મનત કરવાનેવું છે એટલે આજે નૈનેતર લેખક ડેટલીક વાર મેજવાઅહારીથી ગુજરાતના પતન

[ ४२२ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५८६ ]

माटे अथवा तो भारतवर्षमां पश्चागेली निर्णगता माटे जैनधर्मनी अहिंसाने ज्वाअ-  
दार भानी थे छे ओमां कंधज तथ नशी. शो वातना विशेषगां ओंक छरतां नवु उदा-  
हन्देहु रजु की शकाय तेम छे अने भाभाशानु उदाहरणु ओमां वद्यु ओंक उमेशा करे छे.

अभाग हाडभारी भोगता, गिरिकहरानां आकर्ष कण्ठे सहन की राणो प्रताप  
पोतानी अणुनम वलणु नणी रथो होतो, पणु न्याइ खरया ज घूरी, पोतानुं अने  
पोताना अनुवायी वर्गनुं पोषणु करवानुं साधन ज घूरी पछु तारे ए ऐडली शब्दी  
हताश थर गयो ! समाट सामे लोडी आथ लटकती राणी, मेवाडी भूमि तालु ज्वाना  
निश्चय पर शो आयो ! साथीहारीने झटा की दृष्टि, पोताना कुदुंच सावे गण्डीना भाष्यसोने  
लह सिंध प्रति प्रथाणु करवानो हिस पणु ओंक निवत उयों.

आ वातनी बनाय ज्वारे भाभाशाने थर त्वारे ते तरत ज होडी आयो अने  
अरवलीनी खारी पर्वतभाणाने आभरी ग्रज्ञाम एकी रहेला भद्रागाणाना वरणुमां पोतानो  
अटणक वारसो रजु क्यों. ए धनया आर वर्ष सुधी पर्याप्त द्वन्द्व सेनिअनो गुगरो  
सुमेथी थरु शक तेम हुं. विशेषगां विनति एकी के- ए रवीकारी आप पाणा इरी पुनः  
शनुनो सामनो करो अने भातभूमिने भाणी लाथ करो. आ संभति आवा समये डाम  
नडी आवे तो पछी येनो अन्य शो उपयोग के ? राष्ट्रनी आपत्ति याणो. ए धन डाम  
न आवे ए धन नथा पणु कंकरा के. हिवानउना हृष्टयगाथी नीकलेला उद्गारेऽगे अने  
तेमना तरइथी भेळेली आवा अणुवारी सहायथी शाणुलमां नवु जेम आव्यु, नवेसरथी  
लडत आरंभाई अने ओमणे चितोड, अन्नमेर अने मांडलगढ सिवाय सारो न मेवाडप्रांत  
उत्ती लीघो. आग लैनधर्मी भाभाशांगे राष्ट्र गौव भेणव्यु. भाभाशानुं नाम आने  
पणु मेवाडमां गौवपूर्वक लेवाय के. चितोडना कारीगरीवाणा भद्रिना खंडीयेरा आने  
पणु ए रमुति तालु करावे के. आवा वारपुरुषोथी लैनधर्म हीघो के. ( यातु )

—७७५७—

## एक अलभ्य महत्वपूर्ण प्रति

लेखक-श्रीयुत अगरचन्द्रजी नाहटा, बीकानेर

हमारी उपेक्षा और असावधानताके कारण कई महत्वके ग्रंथ नष्ट हो  
रहे हैं या विक्रय द्वारा इत्ततः हो रहे हैं। इस छोटेसे लेखमें पेसी ही  
एक महत्वकी कृति, जो इस समय अलभ्य है, उसका उल्लेख किया जाता है।

कई वर्ष पूर्व नाथनगरनिवास श्रीयुत अमरचन्द्रजी बोथाराने कहा था  
कि अजिमगंजके नेमिनाथ भंडारमें एक महत्वकी प्रति थी, जिसमें खरतर-  
गच्छीय आचार्योंने रचे हुए स्तुति स्तोत्र और उन आचार्योंसे सम्बन्ध रखने-  
वाली कई एक कृतियाँ थीं। इस प्रति को बीकानेरके खरतरगच्छीय श्रीपूज्य  
जिनचारित्रस्त्रिजीने भी देखी थी। उसकी प्रत्यंतर करनेके लिए वे उसे

अंक ११ ]

## एक अदृश्य भुज्ज्वपूर्ण प्रति

[ ४२३ ]

बीकानेर भी लाये थे, पर न मालूम वह प्रति कहाँ गायब हो गई। बहुत प्रयत्न करने पर भी अद्यावधि उसको उपलब्धि न हो सकी।

इस वर्ष बीकानेरके बृहद् ज्ञानभंडारके फुटकर पत्रोंका अवलोकन करते समय सौभाग्यवश उस प्रतिकी सूचि उपलब्ध हुई जिसे सं. १९२४ के ज्येष्ठ शुक्ला प्रथम १३ को, अजीमगजमें उक्त प्रतिको बहाँकी बड़ी पोसालमें देखकर, लिखी थी। सूचिके लिखे अनुसार इसकी पञ्चसंख्या १४४ या १४५ थी और सं. १४९० के मार्गशीर्ष शुक्ला ७ को प्रति लिखी गई थी। श्री अमरचन्द्रजी बोथराके कथनानुसार इस प्रतिका नाम ‘जिनभ्रस्त्रिस्वाध्याय-पुस्तिका’ है।

उपलब्ध सूचि के अनुसार यह प्रति करीब १०० कृतियोंके संग्रहरूप थी। प्रारंभमें दशवैकालिक, पाक्षिकसूत्र, साधुप्रतिक्रमण, स्थविरावली, उपदेश-माला, बृहत्संग्रहणी, कर्मविषयक आदि प्रकरण थे। मध्यमें जिनेश्वरस्त्रि, जिनचन्द्रस्त्रि, अभयदेवस्त्रि, जिनबलभस्त्रि, जिनदत्तस्त्रि आदिकी कृतियें और अंतमें जिनेश्वरस्त्रिरचित ‘चन्द्रप्रभचरित्र’ (गाथा ४०) थे।

इस प्रतिमें कई अन्यथा अलभ्य ऐसो कृतियें भी थी, उनके नाम यहाँ देता हूँ ताकि इसके महत्वका पता चल जाय—

|    |                                    |      |    |         |     |
|----|------------------------------------|------|----|---------|-----|
| १  | जिनपतिस्त्रिपंचाशिका               | गाथा | ५५ | पत्रांक | १२० |
| २  | जिनेश्वरस्त्रिसप्ततिका             | „    | ७४ | „       | १२१ |
| ३  | जिनप्रबोधस्त्रि चतुःसप्ततिका       | „    | ७४ | „       | १२२ |
| ४  | जिनकुशलस्त्रि बहत्तरी              | „    | ७४ |         |     |
| ५  | जिनलब्धिस्त्रि बहत्तरी             | „    | ७४ |         |     |
| ६  | जिनलब्धिस्त्रि स्तूपनमस्कार        | „    | १३ |         |     |
| ७  | जिनलब्धिस्त्रि नागपुर स्तूपनमस्कार | „    | ८  |         |     |
| ८  | अभयदेवस्त्रिकृत ऋषभस्तष्ट          | „    | ८  | पत्रांक | १४२ |
| ९  | „ नेमिस्तव                         | „    | ८  | „       | “   |
| १० | „ स्तंभनपार्श्वस्तव                | „    | ८  | „       | “   |

इनमें नं. १ से ७ तककी कृतियें ऐतिहासिक दृष्टिसे बड़े ही महत्वकी हैं। इसके प्राप्त होनेसे खतरगच्छके इतिहासमें एक नया प्रकाश मिलेगा। अतः सर्व सज्जनोंसे सादर अनुरोध है कि जिन्हें उक्त प्रति या उपरोक्त कृतियें (इनमेंसे कोई भी) प्राप्त हो तो मुझे सूचित करनेकी कृपा करें।

ठि. नाहटोंकी गवाड, बीकानेर।

# शाह हुकुमचंदजी सुराणा

लेखक-श्रीयुत हजारीपलजी बांडिया, बीकानेर

शाह हुकुमचंदजी सुराणा, राव अमरचंदके लघु भ्रता थे। आप भी बड़े और पराक्रमी योद्धा थे। आपका सारा जीवन बीकानेर राज्यकी सेवा और रणस्थल में बीता था। आपके जन्म और स्वर्गवासकी तिथि अभी तक निश्चित नहीं हो पाई है। आप निःसंतान ही स्वर्गवासी हो गये थे।

वि. सं. १८७१ (ई. स. १८१४) में बीकानेर राज्यका चुरु पर अधिकार करनेके पश्चात् वहांके थाने पर शाहजी हुकुमचंदजी सुराणाको थानेदारके पद पर नियुक्त किया गया।

वि. सं. १८७३ (ई. स. १८१६) में पृथ्वीसिंह चुरुवालेने रतनगढ़ पर अधिकार कर लिया। जब यह समाचार महाराजा सुरजसिंहजीको मालूम हुआ तो उन्होंने हुकुमचंदजी को फौज मुहासिब बनाकर रतनगढ़ भेजा। शाहजीने वहाँ पहुँचकर पृथ्वीसिंहसे लडाई कर रतनगढ़ खाली करा लिया। हुकुमचंदजी की इस सफलता से महाराजा सुरजसिंहजी बड़े प्रसन्न हुवे और उन्हें दीवानगी प्रदान की।

वि. सं. १८८६ (ई. स. १८२९) में जैसलमेर इलाकेके गांव राजगढ़के भाटी राजसी आदि बीकानेरके सरकारी सांदोका टोला एकड़ ले गये। जब सांदोका टोला भाटीयोंने वापिस नहीं दिया तो बीकानेर से सुराणा शाहजी हुकुमचंदजीकी अध्यक्षतामें ३ हजार सेना जैसलमेर पर भेजी गई। दोनों सेनाओंका वास्तवी गांव के पास घमासान युद्ध हुआ। बीकानेरी फौज कम होनेसे जैसलमेरवालोंका विजय हुआ। सुराणाजीके साथ महाजन टाकुर वैरिसाल व महेता अभयसिंह भी प्रधान सैना संचालक थे।

बीकानेर, जयपुर और जोधपुरके कुछ सरदार इधर उधर राज्यमें लूटमार कर अपना जीवननिर्वाह करने लगे, जिससे साधारण प्रजाके जीवनका पल पल खतरोंसे भरा रहता था। इसलिए सं. १८८६ के श्रावण मास में मि. जॉर्ज कलार्क उपर्युक्त तीनों राज्योंसे मिल, ऐसे सरदारोंको नाश करनेके विचारसे सेखावाटी गये। इस अवसर पर महाराजा रत्नसिंहजीने शारजी हुकुमचंदजी पवं मेहता ×हिन्दुमलजीको मि. जॉर्ज की सेवामें ऐसे लुटेरे सरदारोंके रोकनेके प्रबन्धके लिए सेखावाटी भेजे गए।

इसी प्रकार जयपुर और जोधपुरसे बख्शी मुन्नालालजी व भंडारी

\* आपका जीवनचरित्र भी प्रकट करनेका मेरा इरादा है।

अंक ११ ]

## शाहु हुकुमचंदजी सुराखा

[ ४२५ ]

लक्ष्मीचंदजी आए। और निश्चय किया गया कि पेसे लुटेरोंकी जहां जहां गढ़िये हैं उन्हें नष्ट कर दी जाय। और राज्यकी ओरसे थाने स्थापित कियें जाय।

इसके बाद बीकानेरकी तरफसे तत्कालीन महाराजसाहबने शाहजी हुकुमचंदजीको इन डाकुओंका टीक प्रबन्ध करनेके लिए नियुक्त किया। आपने चंद दिनोंमें ही गांव लोढासरके मालिक बीदावतकी गढ़ीको गिरा दिया एवं उसे गिरफतार करा लेया। तदुपरान्त आपने अनेक डाकुओं की गढ़ीयें नष्ट कर उन्हें गिरफतार कर लिये। आपने लोढासर, मोगणां, चारी-सेला आदि अनेक गढ़ीयें निरा कर वहाँ राज्य के थाने स्थापित किये।

इसी वर्ष महाजनके ठाकुर वैरिशालने अपने यहां बरीब २०० लुटेरे डाकुओंको रख छोड़ा था। महाराज रत्नसिंहजीने उसे प्रथम डाकुओंको निकालनेके लिए कहा पर उसने ध्यान नहीं दिया, तो तत्कालीन बीकानेर-पतिने वि. स. १८८६ कार्तिक वदि १ (ई. स. १९२९ ता. १३ अक्टोबर) को सुराखाजी हुकुमचंदजीको सेनापति बनाकर, उनकी अध्यक्ष में ठाकुर वैरिशाल पर सेना भेजी। शाहजी हुकुमचंदजीके आनेके समाचार सुनकर वह (वैरिशाल) भागकर अंग्रेजोंके इलाके गांठटीघीमें जा रहा। ठाकुरके पुत्र तीन दिन तक तो शाहजीके ढंकेकी चोट सहते रहे, अंतमें इस फिजुलके खूनखराबीसे कोई फायदा न देख किलेको शाहजी हुकुमचंदजीके कर कमलोंमें सुरुद कर उनकी सेवामें हाजिर हो गये। थोड़े दिन बाद ठाकुर वैरिशाल भी आपकी सेवामें उपस्थित हो गया।

इन्हीं दिनोंमें आप गांव केली सौसन्य भेजे गये। जिस समय महाराजा रत्नसिंहजीने पूगलकी ओर प्रस्थान किया तब आप भी महाराजाजी के साथ थे।<sup>x</sup>

महाराजा रत्नसिंहके राज्यकालमें सरदारों डाकुओंने बहुत उपद्रव मचा रखा था। वे प्रजाको बहुत कष्ट देते थे। मानसिंह, हमीरसिंह, विसनजी, पृथ्वीसिंह, प्रतापसिंह आदिने राज्यमें खूब धूम सचा रखी थी। इन्होंने बीकानेर राज्यके करणपुरा, लाखणवास, अजीतपुरा, सीधमुख आदि करीब सौ से उपर गांवोंको बरबाद कर छाला था। इस पर बीकानेरसे शाहजी हुकुमचंदजी इनका दमन करनेके लिए भेजे गये। आपने जाकर सबको भलीभांति सजा देकर उपद्रवको शांत किया।

वि. सं. १९९ वैशाख सुदी १२ (ई. सं. १८३८ ता. ६ मई) को कर्नल एल्विसने बीकानेरमें एक खरीता भेजा उसमें लिखा कि मारवाड़की सरहद के लुटेरोंके प्रबन्धके लिए सेना भेजो। इस पर हुकुमचंदजी सुराणा

<sup>x</sup> श्रद्धेय रायबहादुर ओझाजीके हालहीमें प्रकाशित 'बीकानेर का इतिहास' द्वितीय खंड से कुछ सहायता ली है।

[४२६]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[१८५६]

मारवाड़की सरहदके लुटेरोंके प्रबन्ध करनेके लिये कर्नल पल्लिसके पास भेजे गये ।

इसी बीच ठा. हरिंसिंह, दुंगरजी, जुहारजी आदि फिर उत्पात मचाने लगे । उन्होंने लक्ष्मीसर आदि कई गांवोंको लूटा और भले घरोंकी कई बहू-बेटियोंको पकड़कर ले जाने लगे । तब शाहजी हुक्मचंदजीने उन पर हमला किया और उनकी सारी गढ़ीयें नष्ट कर ढाली और उन्हें भगा दिये ।

श्रीजी साहिब बहादुरने आपको खिदमतों पर प्रसन्न होकर गांव साम-लसर सं. १८९५ जेठ वदि ४ को शाह हुक्मचंदको पटे दिया ।

संवत् १९०१ में आप रियासत बीकानेरके दीवान हुवे ।

रु. ३००) शाह हुक्मचंदजीने सुजानगढ़ जाषता मोतीयारों चोकडो बंगसिया तेरी कीमत । सं. १९०५ मा. व. १३ ।

रु. ३००) मोतीयोंका चोकडा, १९०१ मीति मिगसर वदि ९ ।

## अनकाई-टनकाईनी जैन गुरु

लेखक—श्रीयुत नाथालाल छग्नालाल शाह.

अनकाई-टनकाई नासिक जिल्लामां जेवला तालुकामां ऐ पहाड़ीओं साथे आवेल छे, जे भनमाड रेशनथी दक्षिणामां ७ माईकनी दूरीना अंतरे छे. आ पर्वतोनी जंचाई ३१८२ फूट छे, जेना पर “सातकाट” किला प्राचीन सभ्यना छे. आ जिल्लामां आ किलो मनमूरत गथ्याय छे. भाषामां आ गाम भाटे अंकाई-तंकाईनो पथ वपराश थाय छे ।

अनकाईमां जेनोनी सात गुफाओं आवेली छे. ऐ गुफाओं नानी हेवा छतां शिल्प-आम धायुं सुंदर छे. दुर्लभोंगे शिल्पकाम धायुं खइं तुरी गयेल छे. आ गुफाओं अनकाई गामधी खड़ तो सो वारना अंतरे आवेल छे. पहेली गुफाने ऐ भाग छे. नीचला भागना भोजराना भागने ऐ रथंभोनो टेका छे. दरेक स्थंभना तणाओं अडेक आँकृति छे. ऐ आँकृतिओं नाना दारपाणों रथान शैक्ती होय एम जथ्याय छे. जे आरयुं पहसुआगमांथी अंडमां पडे छे तेनुं शिल्पकाम धायुं ४ सुंदर छे.

अंदरनो अंड समग्रास छे. तेनी छतने चार थांबलाओंनो टेका छे. दसमाथी आरमा सैक्षा सूखी जेवा थांबलाओं अनता हुता तेवा आ थांबलाओं छे. थांबलाओं पर चार हाथवाली नानी आँकृतिओं जेवामां आवे छे. दरेक आँकृति उपर शिल्पकाम जेवामां आवे छे, जे भाँडिरना प्रवेश दारना जेवुं ४ सुशेळित छे. भोजरामां क्षुं नथी. उपला

1 Gazetteer of the Bombay Presidency 1883 Vol. XVI P. 423-24  
Archeological Survey of Western India, 1888 Vol. VI. P. 58-59.

અંક ૧૧]

## મહનકાંઈ-ટનકાઈની જૈન ગુરુણી

[૪૨૭]

માણમાં પહસાળની આગળના લાગમાં એ સ્થંબો છે. એ સ્થંબો નીચેના માળ ક્રેવા સુંદર રીતે ડાતરી કાઢવા નથી. અંદરનો અંડ સંપૂર્ણ રીતે સાદો છે.

બીજુ ગુરુણો પણ એ માળની છે. અને પહેલી ગુરુણે ધણી મળતી આવે. છે. પહસાળા અંડના બહારના આરાઝો જેવી છે. નીચેના લાગ ઉપર પહસાળની લંબાઈ છીસ ફૂટ અને પહોળાઈ બાર ફૂટ છે. તેના દરેક છેડે એક મહોટી આકૃતિ જેવામાં આવે છે. જમણું કે પચિઅ લણીના છેડે એક પુરુષની આકૃતિ છે તે ધીર તરીકે ઓળખાય છે. તે હાથી ઉપર એઠેલ છે. હાથી તેમજ ધીર જુદા જુદા જોડામાંથી ડાતરી કાઢવામાં આવેલ છે. ઈદ્રાણી કે અંબા તેની રહાયે છે. તેને રંગ કાગળ વગેરે લગાડીને લોકોને જેવી આકૃતિ અનાવી છે કે તેથી તે જીવાની હેવીની લાગ છે.

અંડનું બારણું પહેલા નંબરની ગુરુણા આરણું જેવું છે. અંડ પરીઅ જમચોરસ ફૂટ છે. તે છેલ્લા અંડને ધણી રીતે મળતો છે. પણ બરાબર ડાતરી કાઢવામાં આધુણ્યો નથી.

મહિરનું દ્વાર વધારે પડતું સાદું છે. તીર્થેકરની નાની મૂર્તિ તેમાં બિરાજમાન છે. આ મહિર તેર સમચોરસ ફૂટ છે, તેમાં જોંચા આસન સાથે એક મૂર્તિના માટે જગ્યા છે. મૂર્તિની આસપાસ પ્રદિક્ષણું દર્શિ શકાય એવા રીતે મૂર્તિ અનાવવાનો જુદેશ હોય એમ લાગે છે, પણ આ મૂર્તિ પૂરી થઈ નથી, અધૂરી રહી છે.

નીચેના આગલા લાગના અંડના જમણું છેહેઠી સીડી વાટે જિપલા માળ જરૂર શકાય છે, કેટલાએક ચોરસ બાકાંઅથી તેમાં કેટલેક અંશે પ્રકાશ મળી રહે છે. બારણું માંથી એક સાંકડા જરૂરામાં જવાય છે, જેને દરેક છેડે એક સિંહ ડાતરેલો જેવામાં આવે છે. અંડ ચાર સ્થંબો સાથે વીશ સમચોરસ ફૂટ અનાવવાની ધારણું હતી પણ અંડનો જોડાએક લાગ જોડી શકાયો છે. ઉક્ત મહિરની લંબાઈ નવ ફૂટ અને પહોળાઈ છ ફૂટ છે અને તેમાં મૂર્તિ માટે દીવાલ આગળ એકદ્દિની છે.

નીંળ નંબરની ગુરુણી છેલ્લી ગુરુણા નીચેલા માળ જેવી છે. આગળનો ઓરડો આશરે પચીસ ફૂટ લાંબો અને નવ ફૂટ પહોળો છે, જેને એક છેડે ધીર અને ખોને છેડે અંબાની આકૃતિએ છે; આમાં ઈદ્રિની આકૃતિને ધણું જ તુલ્યાન થણું છે. તેનો હાથી બરાબર ઓળખાયો શકાતો નથી. અમરધારીએ ઉપરાત ગાંધર્વો તેના પરિમારકો છે. અંડની દરેક બાળુંએ એક ચાર હાથવાળા વામન છે. મકરો વચ્ચે એક તોરણું ક્રમાન છે કે જેવી ક્રમાન હાલના જૈન મહિરામાં આવા સ્થાનોમાં સામાન્ય છે. અંબાના પણ પરિમારકો છે. તેમાંનો એક પરિમારક એક નાના પ્રાણી ઉપર આરણ થયેલો જેવાય છે. તેના હાથમાં એક મહોટી લાકડી છે. ઘીને એક તાપસ છે જેને મહોટી હાઠી છે, એ તાપસ જીવ લઈ જાય છે. આખ્રી વૃક્ષનાં પાંદડાએ આ આકૃતિ ઉપર આલેખવામાં આવ્યા છે. એ પાંદડાએના છ વિલાગ કરવામાં આવ્યા છે જે સીધા તોરણો નીચે થઈને જરૂરે અંતરે લટકે છે, આ તોરણો શિદ્યકામના મથાળા સુધી પહોંચેલાં જેવામાં આવે છે. તોરણાની મધ્યમાં ક્રીતિસુખ છે.

કૃતા અંડમાં એક બારણું વાટે જરૂર શકાય છે. એ બારણુંની શોલા સામાન્ય છે,

[ ४२८ ]

## श्री जैन सत्य प्रकाश

[ १५६ ]

भांडनी लंबाई २२ फूट अने पहोलाई २५ फूट छे. छतने चार स्थंभोगो टेका. छे. मध्यस्थ चोरसाईमानुं कमળ धण्डूं ज सुन्दर छे. कमणो एक ज मध्य आँदुवाणी चार पांभडीओनी हार छे, जेमानी अदर अने बहारनी साही छे, ज्यारे बहारथी गणतां भीजु हारमां सोजे पांभडीओ उपर मतुष्य आँकृतिओ डात्रवामां आवेली छे. यो आँकृतिओमानी धण्डू-भरी स्वीओनी छे. आ अधी आँकृतिओ कांतो नृत्य करे छे, अथवा तो डोर्ड संगीतनुं वादी वगाउ छे. त्रीजु हारमां चौवीस पांभडीओ छे, तेमां दरेक उपर डोर्ड हेली सहचारी साथे के सहचारी विना डात्रवामां आवेल छे. ये हेलीओ तेमनां वाखनो उपर भिराजमान जेवामां आवे छे. योक अष्टदेश डारमां आखुं कमળ आवेलुं छे, तेनी बहार एक झुणुमां एक आँकृति छे, न योक पगे बेली छे. भीज दरेक झुणुमां तथु त्रणु आँकृतिओ छे, जेमां मेहोटी आँकृति मध्यमां नाचती के रमती ज्यायाय छे. तेने ये परियारेङ्का छे. पाञ्चानी हिवाल उपर दरेक आजुओ जिन लगवाननी मूर्ति नम इपमां छे. ये मूर्तिनुं कह ज्ञवनकाजना (Life size) कह जेटलुं ज छे. डाई आजुओ एक तीर्थ-करनी मूर्ति छे, जे शान्तिनाथनी हेवी लेठये. अनुं कारणु ये छे के ये मूर्ति नीचा आसने स्थित थगेही छे, अने तेना दरेक छेडे एक लक्त डात्रवामां आवो छे. पक्षी एक सिंह अने एक हाथी डात्रवामां आवेल छे. दरेक आजुओ धर्मचक्र छे. अक्तनी नीचे सोलमा तीर्थकरना लांछन इप मृग जेवामां आवे छे. मृगनी दरेक आजुओ एक अक्तनी आँकृति नजरै पडे छे. जिन लगवाननी मूर्तिने छातीना मध्य लागमां हीराना आकारतुं चिह्न देखाय छे. भोजराना लागना शिल्प काममां दरेक आजुओ पार्श्वनाथनी मूर्ति छे, जेतुं हृश्य मध्यस्थ आँकृति जेवुं छे. आ आँकृतिनुं कह मेहोटी मूर्ति करतां त्रीज लाग जेटलुं छे.

आ मूर्ति पञ्चशेष झण्डुने लीघे ओणभाई आवे छे. शांतिनाथना भस्तकनी सपाठी आवे येवा दरेक जाभवामां जिन तीर्थ-करनी योक एक मूर्ति भिराजमान छे. तीर्थ-कर शांतिनाथना भवाना उपरना लागमां नाना विद्याधरो जेवामां आवे छे. आ विद्याधरो उपर ऐ हाथीओ लेई शक्षय छे, जेमनी सुंटो एठेली एक नानी आँकृतिनी तरइ वणेली छे. आ आँकृतिनी दरेक आजुओ तेमज हाथीओ उपर चार पुरुषो अलै खीओ छे, तेचो अक्ति माटे जेठती वस्तुओ लावतां ज्यायाय छे. तेमना उपर अन्दर झीर्तिमूर्ख अने ७ वर्तुली साथे एक तोरणु छे. ये तोरणु उपर पथु भांडनी साथी जांभी कुमाननी नीचे सात नानी आँकृतिओ जेवामां आवे छे. आखुं अखुं हालता जैन भाद्रिशेभां पथु भाजुम पडे छे, तेथी आ अधी वस्तुओ पुरातन होई शडे नहीं, तेमना समयकाळ धण्डूं करीने भरामा के तेऱमा सैकडोने हेवो जेठाये.

पार्श्वनाथनी मूर्ति भीजु आजुओ छे. ये मूर्ति आंगणाओना टेऱवाथी ऐ लक्तोना भाथाने स्पर्श करती ज्यायाय छे, डाई आजुओ एक स्वी छे. जमणी आजुओ एक एडेवी आँकृति छे. पार्श्वनाथना भस्तक उपरनी संपूर्ण य पर एक लगभग अर्ध गोणाकार वस्तु छे, जेनो उपयोग अन तरीक थतो हो. तेना उपर हाथ लेडेली एक मूर्ति जेवामां आवे छे. बाला अन्ने आजुओ भीजु ऐ मूर्तिओ छे तेमना हाथमां कंध कंधयोरस

અંક ૧૧]

## અનકાઠ-ઘનકાઠની જૈન ગુફા

[૪૨૬]

વરતુ છે. એ વરતુ તેઓ તાપસો ઉપર ફેંકતી જણાય છે. મહિરનું દાર શોભાયુક્ત આકૃતિ વિનાતું છે. મહિર બાર સમગ્રોરસ કુટ છે. અને તેની મધ્યમાં મૂર્તિ માટે જગ્યા છે, તેની પછવાડે જમણી બાળું એક મહેસું બાંકુ છે, એ વાટે નીચેના નાના ખંડમાં જઈ શકાય છે. એ ખંડમાં એક મૂર્તિ છે. આ મૂર્તિ મહિરમાંથી ફેંક દેવામાં આવેલી હોય એમ લાગે છે. મૂર્તિએ માટે નીચેના લાગમાં ગુમ ખડો રાખવાનો રીવાજ મહભદ ગીજનીના હુમલા પઢી ચાલુ થયો છે. ને વખતે મુલ્લીમેણે મૂર્તિ લાગવાનું કામ કરવા માંડ્યું હતું તે વખતે આ મહિર ઉપરોગમાં હતું.

ચોથી ગુફાને એ જગ્યા સપાઠ ચોરસ સ્થાંબો છે. એ સ્થાંબો પડસાળની મોખરે આવેલા છે. પડસાળની લંબાઈ ૩૦ કુટ અને પહેણાઈ ૮ કુટ છે. બારણું પહેલા નંબરની ગુફા જેવું જ છે. ખંડની જાડાઈ અદાર કુટ અને પહેણાઈ ચોવીસ કુટ છે. તેની છતને મધ્યમાંના એ સ્થાંબોથી ટેક મળા રહે છે. બાળુની દીવાલો ઉપર તેમજ મોખરે અને પાછળના ભાગમાં પણ સ્થાંબો છે. એ સ્થાંબોની રચના હાકના શિલ્પયુક્ત મહિરા જેવા છે. પાછળી દીવાલના ભાગમાં એક બાંકડો છે તે મહિરના દાર તરક પગથીયાંની ગરજ સારે છે. મૂર્તિની એક પાછળી દીવાલ તરક છે. એ દીવાલની અંદર એક કુમાનવાળા ગોખલો કરવાનું કામ શરૂ કરવામાં આવ્યું હતું પણ એ કામ અધ્યરું જ રહ્યું છે.

પડસાળની ડાખી બાળુના સ્થાંબ ઉપર એક શિલ્પાલેખ છે ને લાગ્યે જ વાંચી શકાય છે, તેની લીખી ધ. સ.ના અગીઆરમા ડે બારમા સૈકાના અરસાની છે.

પૂર્વ બાળુનાં ખીનાં જોદાકમો વધારે નાનાં છે, તેઓ ધણ્યાં તૂરી પડયાં છે, અને તેમને ધણ્યું તુકશાન થયું છે. તેમનાં બારણું પહેલી અને ખીજુ ગુફાઓનાં બારણું જેવા છે. આમાંના એક મહિરમાં તીર્થાંકરની મૂર્તિ છે. આ જોદાકમો ઓછા વધતા અશે પુરાઈ ગયાં છે.

નાંબ-સતરમી શતાબ્દિ આસપાસમાં થઈ ગયેલ વિદ્ધાન કવિ મહોધાધ્યાય શ્રી. મેધ-વિજયલું પોતાના. થયેલ ચાર્ચુમાસ દરમ્યાન એક વિજયપિત્ર જેવું નામ “મેધહૃત સમસ્યા લેખ” છે, એ વિનાંતિપત્ર તૈયાર કરી આચાર્ય વિજયપ્રભસરિને દીવઅંદર મોકદી આપેલ, જેમાં ઔરંગાખાદથી દીવઅંદર સુધીનો ઝોગલિક તેમજ પ્રાકૃતિક તાનમે પરિચય કરાવેલ છે. તે “મેધહૃત સમસ્યા લેખ”ના જ્યોતિકાંઠમાં અણકિણુકી પર્વત માટે ઉદ્દેખ કરતાં જણાવેલ છે તે-પૂર્વકાળમાં પાર્વતનાથ લગડાનતી આ ભૂમિ પર દરસના થયેલ છે તેથી આ સ્થળ અતિ પવિત્ર ભનાય છે—૧

ગત્યૌત્ಸુક્યેડ્વયણકિટણકીર્તનગ્યો: સ્થેયમેષ  
પાર્વત્યસ્વામી સ ઇહ વિહૃત: પૂર્વમુર્વીર્ણસેવ્ય:  
જાગ્રદૂરે વિપદિ શરણ સ્વર્ગિલોકેડ્વિષન્દ-  
મત્યાદિત્વં હુતવહસુખે સમ્ભૂતં તર્દ્ધિ તેજ: ॥ ૪૭ ॥ ૨

૧ Gazetteer of Bombay Presidency. Vol. 16. PP.. 423-24.

૨ વિજયપિત્ર નિવેદી મુનિ. જિનવિજય, પૃષ્ઠ. ૨૨

# સ્તોમાં ચાલા?

## દીક્ષા

૧. પાદીતાણુમાં મેતિસુમીયાની ધર્મશાળામાં પરમ પૂજય આચાર્ય મહારાજ શ્રી વિજયલક્ષ્મિસૂરિલું મહારાજે રાજકોટ નિશાસી ખેલા વિકમસી મેનણુભાઇને અષાડ શુહિ ઉના હિવસે હીક્ષા આપી. હીક્ષિતનું નામ સુધૂર શ્રી. વિમલવિજયલું રાખીને તેમને પૂર્ણ પણ શ્રી સુમતિવિજયલના શિષ્ય બનાવ્યા.

૨. રતલામાં પરમ પૂજય આચાર્ય મહારાજ શ્રી વિજયલક્ષ્મિસૂરિલુંએ ઘેડા (મારંબાડ) નિવાસી લાઈ કુમુરચંદ્રને જેઠ વહિ ૧૧ના હિવસે પોતાના શિષ્ય તરીકે હીક્ષા આપી. હીક્ષિતનું નામ સુ. શ્રી. લક્ષ્મીવિજયલું રાખ્યામાં આવ્યું.

૩. ધ્રાગાંગામાં પૂજય સુ. શ્રી. કનકવિજયલું મહારાજે ધાર્ણેરાવ (મારંબાડ) નિશાસી લાઈ ચુનીલાલલું સાગરમંદળ પરમારને અષાડ શુહિ ૧૦ ના હિવસે પોતાના શિષ્ય તરીકે હીક્ષા આપી. હીક્ષિતનું નામ સુ. શ્રી. ચન્દ્રમલવિજયલું રાખ્યામાં આવ્યું.

૪. અમદાવાદમાં વીરના જીલ્લાથે પૂજય પણ. શ્રી. કીર્તિસુનિલ મહારાજે સી.સી.ડી. (કર્ચા) નિવાસી લાઈ નેણુસી રામૈયાને સ્વશિષ્ય તરીકે હીક્ષા આપી. હીક્ષિતનું નામ સુ. શ્રી. લક્ષ્મિકરમુનિ રાખ્યામાં આવ્યું.

## શ્રી કૈન્દ્રધર્મ-સત્યપ્રકાશક સમિતિના પાંચ પૂજ્યોનાં ચતુર્મસ્સ

૧. પરમ પૂજય આચાર્ય મં. શ્રી. સાગરાંદસ્તૂરીધરલું મહારાજ

ઠે. પલાસાલ આખુની ધર્મશાળા, પાદીતાણા. (કાઢિયાવાડ)

૨. પરમ પૂજય આચાર્ય મં. શ્રી. વિજયલિધસ્તૂરીધરલું મહારાજ

ઠે. શા. ગોત્રીલાલલું વેહ: વેહાંકા ત્રિપોલિયા, થીકાનેર(રાજપુતાના)

૩. પરમ પૂજય આચાર્ય મં. શ્રી. વિજયલાલણસ્તૂરીધરલું મહારાજ

ઠે. સાગરનોંકાશ્રય, રાધનપુર (ગુજરાત)

૪. પરમ પૂજય સુનિલમહારાજ શ્રી. વિદ્યાવિજયલું મહારાજ

ઠે. ક્રેન ઉલાશ્રય, - પોષ્ટ વીણાયા, મંજલરેલડીયા. (કર્ચા)

૫. પરમ પૂજય સુનિલમહારાજ શ્રી. દર્શનવિજયલું મહારાજ

ઠે. ગુમભકૃતાની ધર્મશાળા, રતનપોળમાં વાધણુપોળ,

અમદાવાદ (ગુજરાત)

जमो त्यु ण भगवओ महावीरस्स

सिरि रायनयरमज्जे, संमीलिय सव्वसाहुसंमइयं ।

पत्त मासियमेयं, भव्वाणं मरगयं विसयं ॥ १ ॥

## श्री जैन सत्य प्रकाश

(मासिक पत्र)

वर्ष ६ ]

ठमंड ७३

[ अंड १२

विक्रम संवत् १५८७ :

वीर संवत् २४६७

: ईर्ष्योसन १५४१

अथाऽ वदि ७ :

भंगणवार

: गुलाब १५

## वि-ष-य—ट-र्ट-न

|    |                             |   |                          |       |
|----|-----------------------------|---|--------------------------|-------|
| १  | चोवीश निन स्तपनमादा         | : | साराभाई भणिवाल नवाख      | : ३६१ |
| २  | श्री हुँभाइतीर्थ            | : | मु. भ. श्री. ज्ञानविजयल  | : ३६४ |
| ३  | निलूलवाद                    | : | मु. भ. श्री. हुँधर्विजयल | : ३६६ |
| ४  | भहुतीनी जैन प्रत्यामाओ      | : | मु. भ. श्री. न्यायविजयल  | : ४०७ |
| ५  | डेटलाई ट्याएानी पुष्पिका    | : | मु. भ. श्री. कान्तिसागरल | : ४१५ |
| ६  | प्रतिहासिक दृष्टिसे प्राचीन | : |                          |       |
|    | जैन वाङ्मयका महत्व          | : | श्रीयुत भा. रं. कुलकर्णी | : ४१८ |
| ७  | लैनधर्मी वीरेनां पराईम      | : | श्री. मोहनलाल दी. चोकसी  | : ४२१ |
| ८  | पक अलभ्य महत्वपूर्ण प्रति   | : | श्री. अगरचन्दजी नाहटा    | : ४२२ |
| ९  | शाह हुँकुमचंदजो सुराणा      | : | श्री. हजारीमलजो बांठिया  | : ४२४ |
| १० | अनंडाई-टनंडाईनी लैन युहा    | : | श्री. नाथाल.क. छ. शाह    | : ४२६ |
|    | समाचार                      | : |                          | : ४३० |

## पूज्य सुनिश्चलेने विज्ञप्ति

मासिक ग्रन्थले न जतां वभतसर खेंचाडी शकाय ते भाटे ज्यां चतुर्मास निश्चिन थयुं हाय त्यांनु संस्नामुं लघी जखावनानी पूज्य सुनिश्चलेने विज्ञप्ति करीये धीमे.

## ल वा ज म

वार्षिक-ऐ दृष्टिया

छुट्ट क-अंड-व्राणु आना

मुद्र : कुलभाई रवज्जमाई कोडारी, प्रभाराई-चीमनवाल गोकुलहास शाह

प्रकाशनस्थान : श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक सभिति कारोबर,

लेशींगभाईनी वाडी, धीकोंदा रोड, अमदाबाद.

मुद्रण स्थान : सुभाष प्रिन्टरी, सदापीस सोस रोड, अमदाबाद

Shri Jaina Satya Prakasha

Regd. No. B. 3801

# अऽधी किंभते भण्डे.

‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ना

## श्री महावीर निर्वाण विशेषांक

ल. महावीर स्वामीना गुवा संबंधी विद्वानोगे लघेवा  
अनेक लेखाथी समृद्ध उपर्युक्त पानांने हाण्डार आंक

मूळ किंभत बार आना

### घटाडेली किंभत ४ आना

[टपाल अर्च टोक आनो वधु]



लगवान महावीरस्वामीन्

## त्रिरंगी चित्र

कणा अने शास्त्रीय हृषिके सर्वांग सुन्दर चित्र  
१४" x १०"ना सार्वज्ञ, सोनेरी बोर्डर



मूळ किंभत आठ आना

### घटाडेली किंभत चार आना

[टपाल अर्च टोक आनो वधु]



## श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति

नेशिंगबाहनी वाडी, धीकंडा-अमहावाह.